**प्रतिज्ञापत्र**

मी **विकास सुभाष पाटील** या प्रतिज्ञापत्राद्वारे असे घोषित करतो की, **कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ जळगांव,** द्वारे सन २०२२ – २०२३ या शैक्षणिक वर्षात होणाऱ्या **एम. एस. डब्लु** **( द्वितीय वर्ष )** समाजकार्य विद्याशाखेतून पदव्युत्तर पदवीसाठी “**अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांची सामाजिक व आर्थिक स्थितीचे अध्ययन” (विशेष संदर्भ : तळोंदे दिगर, ता. चाळीसगाव जि. जळगांव)** या विषयावरील माझा लघुशोध प्रबंध सादर करीत आहे. हा लघुशोध प्रबंध मी. **सहा. प्रा. वर्षा एस पालखे** यांच्या मार्गदर्शनाखाली पूर्ण केलेला आहे.

प्रस्तुत शोधप्रबंध मुळात माझाच असून यापूर्वी मी अन्य कोणत्याही विद्यापीठास हा शोधप्रबंध सादर केलेला नाही.

ठिकाण : जळगांव

दिनांक :

संशोधक

**विकास सुभाष पाटील**

एम. एस. डब्लु ( द्वितीय वर्ष )

समाजकार्य विभाग

(क.ब.चौ.उ.म.वि.,जळगांव)

**मार्गदर्शकांचे प्रमाणपत्र**

प्रमाणित करण्यात येते की, **विकास सुभाष पाटील,** समाजकार्य विभागातील एम. एस. डब्लु द्वितीय वर्षाचा विद्यार्थी असुन त्याने “**अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांची सामाजिक व आर्थिक स्थितीचे अध्ययन” (विशेष संदर्भ : तळोंदे दिगर, ता. चाळीसगाव जि. जळगांव)** या विषयावर लघुशोध प्रबंध मानसनीती आणि समाजविज्ञान विद्याशाखेतील समाजकार्य पारंगत (एम. एस. डब्लु) या पदव्युत्तर पदवीसाठी माझ्या मार्गदर्शनाखाली पूर्ण केलेला आहे.

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध **कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव** अंतर्गत समाजकार्य विभाग येथील सन २०२२-२०२३ या शैक्षणिक अभ्यासक्रमाची अंशीक पुर्तता म्हणून सादर करण्यात येत आहे.

मी प्रमाणित करते की, उपरोक्त विषयावरील लघुशोध प्रबंध अहवाल परीक्षेसाठी सादर करण्याच्या योग्यतेचा आहे.

ठिकाण : जळगांव

दिनांक :

मार्गदर्शक

**सहा. प्रा. वर्षा एस पालखे**

समाजकार्य विभाग

(क.ब.चौ.उ.म.वि.,जळगांव)

**संचालकांचे प्रमाणपत्र**

**विकास सुभाष पाटील** यांनी “**अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांची सामाजिक व आर्थिक स्थितीचे अध्ययन” (विशेष संदर्भ : तळोंदे दिगर, ता. चाळीसगाव जि. जळगांव)** हा लघुशोध प्रबंध कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठाच्या मानसनीती आणि समाजविज्ञान विद्याशाखेतील समाजकार्य पारंगत (एम. एस. डब्लु) या पदव्युत्तर पदवीसाठी **सहा. प्रा. वर्षा एस पालखे** यांच्या मार्गदर्शनाखाली असुन इतर कोणत्याही विद्यापीठात अन्य पदवी अथवा पदविकेसाठी सादर केलेला नाही.

**विकास सुभाष पाटील,** यांचा प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध बहुमोल स्वरूपाचा असुन आपल्या लेखनात या संदर्भ साहित्यात आधार त्यांनी घेतला, त्याचा आवश्यक तेथे यथोचित निर्देश केलेला आहे. हा लघुशोध प्रबंध समाजकार्य पारंगत (एम. एस. डब्लु) या पदव्युत्तर पदवीसाठी दाखल करून घेण्यात यावा.

ठिकाण : जळगांव

दिनांक :

**प्रा. डॉ. अजय एस. पाटील**

संचालक तथा विभाग प्रमुख,

समाजकार्य विभाग,

सामाजिक शास्त्रे प्रशाळा,

क.ब.चौ.उ.म.वि.,जळगांव.

**ऋणनिर्देश**

जीवनातील ध्येयाची ऊंची गाठतांना यश-अपयश पायरी चढण्यासाठी तसेच संघर्षमय जीवनात माणसाला कुणाच्या मदतीची, आणि मार्गदर्शनाची गरज भासते. कारण माणसाला मार्गदर्शनाशिवाय यशस्वीतेची दिशा सापडत नाही. त्यामुळे स्वतःच्या पातळीसोबत योग्य मार्गदर्शनाची गरज असते. त्यांच्या विचारांच्या मूल्यांसह संशोधकाला ज्याचे सहकार्य लाभते. अशा व्यक्तींचे ऋण व्यक्त करणे मी माझे आद्य कर्तव्य समजतो.

मी निवडलेला संशोधन विषयाला आमच्या समाजकार्य विभागाचे संचालक तथा विभाग प्रमुख **प्रा. डॉ. अजय एस. पाटील सर** यांनी दिलेली परवानगी व प्रेरणा यासाठी मी त्यांचे आभार मानतो. तसेच लघुशोध प्रबंडचे मार्गदर्शक **सहा.प्रा. वर्षा एस. पालखे** यांनी वेळोवेळी केलेले अमूल्य असे मार्गदर्शन व विषय पूर्ण करण्यासाठी मदत करणारे प्रा. डॉ. दीपक सोनवणे, सहा. प्रा. भगवानसिंग गिरासे, प्रा. डॉ. कविता पाटील, सहा. प्रा. विनेश पावरा, सहा. प्रा. अतुल पाटील यांनी सहकार्य करून प्रोत्साहन दिले त्याबदल मी त्यांचा प्रथम ऋणी राहील.

तसेच ग्रंथालयाचे शिक्षक व इतर प्राध्यापकांचे व कर्मचाऱ्यांचे लाभलेले सहकार्य त्याबदल मी त्यांचा ऋणी आहे. तसेच माझे सहकारी मित्र-परिवार यांचे सहकार्य लाभले त्यांचा पण मी आभारी आहे. माझ्या आजपर्यंतच्या शिक्षणासाठी सदैव प्रेरणास्थान असलेले माझे आई-वडिल व भाऊ यांचे मी ऋण मानतो व माझे प्रथम कर्तव्य समजतो,

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंधाच्या कार्यात इतर व्यक्तिंकडुन लाभलेले सर्वोतोपरी सहकार्याबदल मी सर्वाचे पुनश्चः आभार मानतो.

वरील सर्वांचे बहुमूल्य आभारी राहून माझा हा लघुशोध प्रबंध मांडत आहे.

धन्यवाद....

**विकास सुभाष पाटील**

**(समाजकार्य विभाग द्वितीय वर्ष )**

**अनुक्रमणिका**

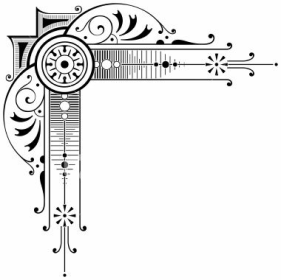
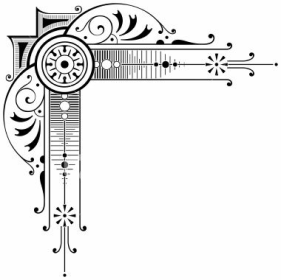
|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **तपशील** | **पृष्ठ क्र.** |
| १) | मुख्यपृष्ठ |  |
| २) | प्रतिज्ञापत्र |  |
| ३) | मार्गदर्शकांचे प्रमाणपत्र |  |
| ४) | संचालकांचे प्रमाणपत्र |  |
| ५) | ऋणनिर्देश |  |
| ६) | अनुक्रमाणिका |  |
| ७) | सारणी सूची |  |
| ८) | आलेख सूची | **X** |
| **९)** | **प्रकरण १ ले : प्रस्तावना** | **०१** |
| **१०)** | **प्रकरण २ रे : संशोधन पद्धती** | **०६** |
| **११)** | **प्रकरण ३ रे : संशोधन साहित्याचा आढावा** | **१९** |
| **१२)** | **प्रकरण ४ थे : तथ्य विश्लेषण व निर्वचन** | **३२** |
| **१३)** | **प्रकरण ५ वे : निष्कर्ष, गृहीतकृत्यांची पडताळणी व सूचना** | **८०** |
|  | अ) निष्कर्ष | ८१ |
|  | ब) गृहीतकृत्यांची पडताळणी | ८५ |
|  | क) सूचना / उपाययोजना | ८७ |
| **१४)** | **परिशिष्ट** | **८८** |
|  | अ) मुलाखत अनुसूची | ८९ |
|  | ब) संदर्भ ग्रंथ सूची | ९६ |

**सारणी सुची**

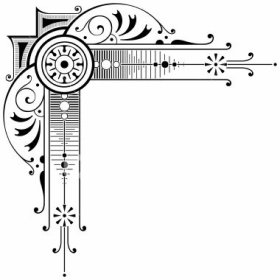
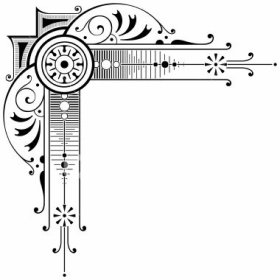
|  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| सारणी क्र. | **तपशील** | | | **पृष्ठ क्र.** | |
| ४.१ | निवेदकांचे लिंग प्रकार दर्शक सारणी | | | ३३ | |
| ४.२ | निवेदकांचे वय वर्ष दर्शक सारणी | | | ३४ | |
| ४.३ | निवेदकांचे शिक्षणाची माहिती दर्शक सारणी | | | ३५ | |
| ४.४ | निवेदकांचा जातीचा प्रवर्ग माहिती दर्शक सारणी | | | ३६ | |
| ४.५ | निवेदकांची बोलीभाषा माहिती दर्शक सारणी | | | ३७ | |
| ४.६ | निवेदकांचे वार्षिक उत्पन्न दर्शक सारणी | | | ३८ | |
| ४.७ | निवेदकांच्या कुटुंबातील, कुटुंब प्रमुख दर्शक सारणी | | | ४० | |
| ४.८ | निवेदकांचा कुटुंबाचा प्रकार दर्शक सारणी | | | ४१ | |
| ४.९ | निवेदकांच्या घरांचा प्रकार माहिती दर्शक सारणी | | | ४२ | |
| ४.१० | निवेदकांचे घर मालकिची माहिती दर्शक सारणी | | | ४३ | |
| ४.११ | निवेदकांच्या घरांची व्यवस्था माहिती दर्शक सारणी | | | ४४ | |
| ४.१२ | निवेदकांना मिळणाऱ्या शिधापत्रिका दर्शक सारणी | | | ४५ | |
| ४.१३ | निवेदकाच्या कुटुंबातील नोकरी धारक व्यक्तीची माहिती दर्शक सारणी | | | ४६ | |
| ४.१४ | निवेदकाच्या कुटुंबातील रोजगार मिळवणाऱ्या व्यक्तींची माहिती दर्शक सारणी | | | ४७ | |
| ४.१५ | निवेदकांच्या कुटुंबातील व्यसन दर्शक सारणी | | | ४८ | |
| ४.१६ | निवेदकांच्या कुटुंबातील व्यसनाचे प्रकार दर्शक सारणी | | | ४९ | |
| ४.१७ | निवेदकाकडे असलेले दळणवळणाचे साधने दर्शक सारणी | | | ५० | |
| ४.१८ | निवेदकाकडे असलेले पशुधनाची माहिती दर्शक सारणी | | | ५१ | |
| ४.१९ | निवेदकाकडे असलेली शेतीची माहिती दर्शक सारणी | | | ५२ | |
| ४.२० | | निवेदकाला मिळणारी सामाजिक प्रतिष्ठा दर्शक सारणी | ५३ | |
| ४.२१ | | निवेदकाविषयी सामाजिक दृष्टिकोन दर्शक सारणी | ५४ | |
| ४.२२ | | सामाजिक कार्यक्रम निमंत्रण माहिती दर्शक सारणी | ५५ | |
| ४.२३ | | सामाजिक कार्यक्रमात कौटुंबिक सहभाग माहिती दर्शक सारणी | ५६ | |
| ४.२४ | | निवेदकाचे नातेसंबंधातील महत्त्व दर्शक माहिती सारणी | ५७ | |
| ४.२५ | | निवेदकाच्या सामाजिक जीवनावर जाणवणारा परिणाम दर्शक सारणी | ५८ | |
| ४.२६ | | आरोग्याच्या समस्यांबाबत नातेवाईकांकडून मिळणारी मदत दर्शक सारणी | ५९ | |
| ४.२७ | | शेतीतून घेतले जाणारे पिकांची माहिती दर्शक सारणी | ६० | |
| ४.२८ | | शेतातील उत्पन्नास मिळणारा योग्य भाव माहिती दर्शक सारणी | ६१ | |
| ४.२९ | | शेतीच्या उत्पन्नातून पूर्ण होणाऱ्या कौटुंबिक गरजा माहिती दर्शक सारणी | ६३ | |
| ४.३० | | निवेदक करत असलेल्या शेती प्रकार दर्शक सारणी | ६५ | |
| ४.३१ | | शेतीतील घेतली जाणारी पीक पद्धत दर्शक सरणी | ६६ | |
| ४.३२ | | शेतीसाठी मिळणाऱ्या शासकीय योजनांविषयी लाभ माहिती दर्शक सरणी | ६७ | |
| 4.33 | | निवेदकास बँकेद्वारे कर्ज उपलब्ध माहिती दर्शक सारणी | ६८ | |
| ४.३४ | | निवेदकावर कर्ज असल्याचे माहिती दर्शक सारणी | ६९ | |
| ४.३५ | | निवेदकावर असलेल्या कर्जाचा प्रकार दर्शक सारणी | ७१ | |
| ४.३६ | | निवेदकाच्या शेती उत्पन्नातून मुलांच्या शैक्षणिक पूर्ण होणाऱ्या गरजांविषयी माहिती दर्शक सारणी | ७२ | |
| ४.३७ | | निवेदकाचा शेती सोबत इतर जोडधंदा दर्शक सारणी | ७३ | |
| ४.३८ | | निवेदक करत असलेल्या शेतीचा प्रकार दर्शक सारणी | ७४ | |
| ४.३९ | | निवेदक शेतीमध्ये वापरणाऱ्या खतांविषयी माहिती दर्शक सारणी | ७५ | |
| ४.४० | | निवेदकाने घेतलेल्या शेतीविषयक प्रशिक्षण दर्शक सारणी | ७६ | |
| ४.४१ | | निवेदकाला बी-बियाणे व कीटकनाशके यांच्या किमती परवडणाऱ्या माहिती दर्शक सारणी | ७७ | |
| ४.४२ | | निवेदकाला शेतीचे उत्पन्न पुरेसे असल्याविषयी माहिती दर्शक सारणी | ७८ | |
|  | | निवेदकाच्या शेती उत्पन्नातून कौटुंबिक विकास होत असल्याची माहिती दर्शक सारणी | ७९ | |

**आलेख सूची**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **तपशील** | **पृष्ठ क्र.** |
| १. | निवेदकाचे वार्षिक उत्पन्न दर्शक स्तंभालेख | ३९ |
| २. | शेतातील उत्पन्नास मिळणारा योग्य भाव दर्शक स्तंभालेख | ६२ |
| ३. | शेतीच्या उत्पन्नातून पूर्ण होणाऱ्या कौटुंबिक गरजा दर्शक वर्तुळालेख. | ६४ |
| ४. | निवेदकावर कर्ज असल्याचे माहिती दर्शक वर्तुळालेख. | ७० |



**प्रकरण पहिले**

**प्रस्तावना**

**प्रकरण** 1 **ले**

**प्रस्तावना**

देशाची आर्थिक प्रगती ही त्या देशाच्या कृषिक्षेत्रावर झालेली दिसून येते. आज जगात प्रगत समजल्या जाणाऱ्या राष्ट्राचा विकास हा त्या देशातील कृषि व्यवसाय सुधारल्यानंतर इतर क्षेत्रात देखील उल्लेखनीय प्रगती झालेली दिसून येते. कृषि व्यवसायाची वाढ करीत असतांना शेतीचा आकार व उत्पादकता या कडे लक्ष्य द्यावे लागते. जय शेतकाऱ्यांकडे जमिनीची उपलब्धता कमी आहे. त्याला “**अल्पभूधारक** **शेतकरी**” असे म्हणतात.

प्रत्येक देशाच्या कृषि विकासासाठी त्या शेतकऱ्यांची धारणक्षमता किती आहे किंवा कोणत्या प्रकारची आहे यावर विकास अवलंबून असतो. ज्या देशात शेती व्यवसायासाठी असणारी जमिनीसाठी उपलब्धता कमी आहे किंवा अल्पभूधारक शेतकऱ्यांचे प्रमाण जास्त असेल तर त्यांची आर्थिक स्थिती नाजुक असते व शेती व्यवसायासामोर विविध समस्या निर्माण होतात.

ज्या राष्ट्रात लोकसंख्या अधिक आहे. त्या राष्ट्रात कृषि व्यवसायावर अवलंबून असणाऱ्यांचे प्रमाण अधिक असते. शेती व्यवसायाशी बांधिलकी जपणाऱ्या देशात अल्पभूधारक शेतकऱ्यांचे प्रमाण अधिक दिसून येते. त्यामुळे शेती व्यवसायात आवश्यक असलेले तंत्रज्ञान, बी-बियाणे, अवजारे, किटकनाशके व जलसिंचनाच्या सुविधा इत्यादींचा वापर करता येत नाही. याचा विपरीत परिणाम शेती व्यवसायावर होतो. प्रगत समजल्या जाणाऱ्या राष्ट्रात देखील शेतीव्यवसाय प्रारंभीकच्या काळात जेमतेम होता. शेती व्यवसायावर अवलंबित्त्वाचे प्रमाण कमी झाले. त्यामुळे धारण क्षेत्राचा आकार देखील वाढला. शेती व्यवसायात अमूलाग्र त्या सुधारणा करणे शक्य झाले. जास्त लोकसंख्या असलेल्या राष्ट्रात शेतीची धारण क्षमता किती आहे. ही पाहणे आवश्यक ठरते.

अल्पभूधारक शेतकरी म्हणजे एक हेक्टर पेक्षा जमिनीचा आकारमान असलेला शेतकरी होय. जय शेतिधारण क्षेत्रात नवीन तंत्रज्ञान, अवजारे, बि-बियाणे इत्यादींचा योग्य वापर करण्याइतपत जमीन नसलेला शेतकरी होय. थोडक्यात कमी शेती असलेला शेतकरी म्हणजे अल्पभूधारक शेतकरी होय. या शेतीच्या धारण क्षेत्रानुसार भुदारकांनी वर्गीकरण सामान्यतः अल्पभूदराक शेतकरी, माध्यम शेतकरी व मोठे शेतकरी असे वर्गीकरण करता येते.

भारतातील बहुसंख्य जनता ही शेती व्यवसायावर आपली उपजीविका करते. १९५०-५१ मध्ये ७०% तर २००९-१० मध्ये ५२% एवढी लोकसंख्या शेतीवर अवलंबून असलेली दिसते. जरी कृषि व्यवसायातील हे अवलंबित्त्वाचे प्रमाण कमी होत असले तरी द्वितीय व तृतीय क्षेत्रापेक्षा उपजीविकेचे साधन म्हणून कृषि व्यवसायाकडे पाहिले जाते.

भारतात शेतीचा आकार आणि उत्पादकता ह्यांत परस्पर संबंध आहे. भारतात उपलब्ध असलेली शेतजमीन व लोकसंख्या ही दोन घटक जुळत नाहीत. जमिनीचा पुरवठा स्थिर असतो. लोकसंख्या मात्र वाढत जाते. परिणामतः जमिनीची मागणी वाढून धारणक्षेत्राचा आकार लहान हॉट जातो. अशा जमिनीच्या लहान तुकड्यावर आधुनिक पद्धतीने शेतीकरणे परवडत नाही. कारण नवीन उत्पादक तंत्र, संकरीत बी-बियाणे, रासायनिक खते, किटकनाशके, जलसिंचनाच्या सुविधा यांचा वापर योग्य प्रमाणावर करणे शक्य होत नाही. त्यामुळे शेतीच्या उत्पादकतेवर व त्या शेतकऱ्यांच्या आर्थिक स्थितीवर प्रतिकूल परिणाम पडतो.

भारतातील शेतीच्या अल्पउत्पादकतेचे एक महत्वाचे कारण म्हणजे शेतीचा अत्यंत लहान आकार, शेतीच्या लहान आकाराच्या संदर्भात दोन बाजू दिसतात. एक म्हणजे धारणा क्षेत्राचा लहान आकार व दुसरे लहान धारणक्षेत्र एकाच ठिकाणी न राहता विखुरलेले असणे. धारणक्षेत्र लहान होण्यामागे शेतजमीनीचा वारसाहक्क, सीलिंग, अॅक्ट, नव्याने शेती विकत घेतलेले शेतकरी व शासकीय जमिनीवर (गायरान) उपजीविका करणारे शेतकरी हे अल्पभूधारक असणारी कारणे आहेत.

अल्पभूधारक शेतकरी हे व्यक्ती किंवा कुटुंबे आहेत ज्यांच्याकडे शेतीच्या उद्देशाने लहान भूखंडाचे मालक आहेत किंवा शेती करतात. त्यांच्याकडे जमीन, भांडवल आणि उपकरणे यासह सामान्यत: मर्यादित संसाधने असतात आणि त्यांची शेतीची कार्ये अनेकदा निर्वाह शेती किंवा लहान उत्पादनाद्वारे दर्शविली जातात.

जागतिक अन्न उत्पादन आणि ग्रामीण उपजीविकेत, विशेषतः विकसनशील देशांमध्ये, लहान शेतकरी महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावतात. तांदूळ, मका आणि गहू यांसारखी मुख्य पिके तसेच विविध फळे, भाजीपाला आणि इतर कृषी उत्पादनांसह जगाच्या अन्न पुरवठ्याचा एक मोठा भाग तयार करण्यासाठी ते जबाबदार आहेत.

या शेतकर्‍यांना बर्‍याचदा बाजारपेठेतील मर्यादित प्रवेश, आर्थिक अडचणी, आधुनिक कृषी तंत्रज्ञानाचा अभाव आणि हवामानातील बदल आणि नैसर्गिक आपत्तींचा धोका यासह अनेक आव्हानांचा सामना करावा लागतो. ही आव्हाने असूनही, अल्पभूधारक शेतकरी लवचिकता, पारंपारिक ज्ञान आणि शाश्वत शेती पद्धती दाखवतात.

अल्पभूधारक शेतकऱ्यांना मदत करण्याच्या प्रयत्नांमध्ये कर्ज आणि वित्तपुरवठा, पायाभूत सुविधा आणि बाजारपेठेतील संबंध सुधारणे, शाश्वत शेती तंत्राला प्रोत्साहन देणे आणि ज्ञानाची देवाणघेवाण आणि क्षमता वाढवणे यांचा समावेश होतो. या उपक्रमांचा उद्देश उत्पादकता वाढवणे, उत्पन्न वाढवणे, अन्न सुरक्षा सुधारणे आणि शाश्वत ग्रामीण विकासाला चालना देणे आहे.

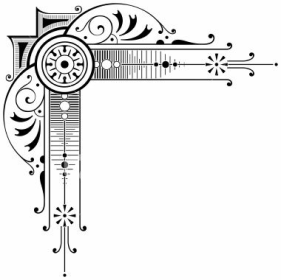
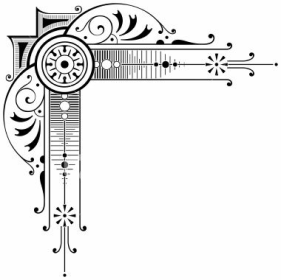
अल्पभूधारक शेतकरी हे व्यक्ती किंवा कुटुंबे आहेत ज्यांच्याकडे शेतीच्या उद्देशाने जमिनीचे छोटे भूखंड आहेत किंवा त्यांचे व्यवस्थापन आहे. ते सामान्यत: पारंपारिक किंवा अर्ध-आधुनिक शेती पद्धती वापरून पिकांची लागवड करतात आणि लहान प्रमाणात पशुधन वाढवतात. लहान शेतकरी जागतिक अन्न उत्पादनात महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावतात, विशेषत: विकसनशील देशांमध्ये, जिथे ते स्थानिक अन्न सुरक्षा आणि ग्रामीण अर्थव्यवस्थेत योगदान देतात.

तसेच, सरकारे, गैर-सरकारी संस्था आणि आंतरराष्ट्रीय एजन्सी अल्पभूधारक शेतकऱ्यांचे महत्त्व ओळखतात आणि त्यांना स्थानिक आणि जागतिक अन्न प्रणालींमध्ये भरभराट आणि योगदान देण्यासाठी सक्षम वातावरण निर्माण करण्याच्या दिशेने काम करत आहेत

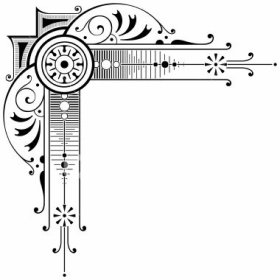
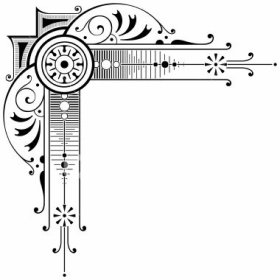
कर्ज, प्रशिक्षण, आधुनिक शेती तंत्र, बाजारपेठेतील संपर्क आणि पायाभूत सुविधांच्या विकासात प्रवेश प्रदान करणार्‍या उपक्रमांद्वारे सरकार, स्वयंसेवी संस्था आणि आंतरराष्ट्रीय संस्थांकडून अल्पभूधारक शेतकर्‍यांना पाठिंबा देण्यासाठी प्रयत्न केले जात आहेत. या हस्तक्षेपांचे उद्दिष्ट अल्पभूधारक शेतकऱ्यांचे जीवनमान सुधारणे, त्यांची उत्पादकता वाढवणे आणि शाश्वत कृषी पद्धतींना चालना देणे.

शेती व्यवसायातील सामाजिक बाजू पाहतांना अल्पभूधारक सर्व जातीत आढळून येतात. जशी जातीची उतरंड आहे. अगदी त्याच प्रमाणे कनिष्ठ समजणाऱ्या जातीत अल्पभूधारक जास्त दिसून येते. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांची आर्थिक स्थिती सुधारायची असेल तर काही मूलभूत सुधारणा करणे आवश्यक आहे. व्यवसायातील अवलंबित्त्व असणाऱ्या लोकांचे प्रमाण कमी केले पाहिजे. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांना सामूहिक शेतीचा प्रयोग अंमलात आणला पाहिजे. द्वितीय व तृतीय क्षेत्राचा विकास करून शेती व्यवसायातील अतिरिक्त मनुष्यबळ या दोन क्षेत्रासाठी वापरले पाहिजे.

यावरून असे लक्षात येते की, अल्पभूधारक शेतकरी यांची आर्थिक स्थिती मजबूत करायची असेल तर अल्पभूधारक शेतकऱ्यांना आवश्यक सोई-सुविधा पुरविल्या पाहिजे. कृषि क्षेत्राचा जास्तीतजास्त विकास करून इतर उद्योग व्यवसायात जास्त लोकसंख्या सामावून घेतली पाहिजे. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांनी आपल्या समस्येवर तोडगा म्हणून सामूहिक शेती या सारख्या तंत्राचा प्रयोग करणे आवश्यक आहे.



**प्रकरण २ रे**

**संशोधन पद्धती**

**प्रकरण 2 रे**

**संशोधन पद्धती**

1. **शीर्षक :**

“अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांच्या सामाजिक व आर्थिक स्थितीचा अभ्यास” (विशेष संदर्भ : तळोंदे दिगर, ता.चाळीसगांव, जि.जळगांव)

**प्रस्तावना :**

**अल्पभूधारक शेतकरी व्याख्या व अर्थ :**

देशाचा विकास हा देशातील कृषि, उद्योग व सेवाक्षेत्रे या सर्वांच्या विकासावर अवलंबून असतो. व प्रत्येक क्षेत्राचा विकास परस्परावर अवलंबून असतो. व प्रत्येक विकास हा परस्परावर अवलंबून असतो.

भारतामध्ये शेती योग्य जमिनीची उपलब्धता प्रती शेतकऱ्यांसाठी इ. स. 1960-61 मध्ये होती. तर 2002-03 मध्ये 1.4 हेक्टर एवढी होती. तर 2011 मध्ये ती 1.0 हेक्टर पेक्षा कमी झाली. शेतीच्या कमी धारण क्षेत्रात नवीन तंत्रज्ञान, भांडवल खते, बी-बियाणे, किटकनाशके व जलसिंचनाच्या अपुऱ्या सुविधा यामुळे शेतकऱ्यांच्या उत्पादन वाढीस मर्यादा पडतात. व आर्थिक स्थिती कमजोर होते.

**व्याख्या :**

1. “अल्पभूधारक म्हणजे आपल्या धारण क्षेत्रात नवीन उत्पादन तंत्र, बी-बियाणे, किटकनाशके

व जलसिंचन यासारख्या बाबींचा योग्य वापर न करता येण्याजोगे लहान जमिनीचे क्षेत्र होय.”

1. “एक हेक्टर पेक्षा कमी जमीन असलेला शेतकरी म्हणजे अल्पभूधारक होय.”
2. “अल्पभूधारक म्हणजे जमिनीची धारण क्षमता कमी असलेला शेतकरी होय.”
3. “एखाद्या व्यक्ति जवळ जमिनीत कृषि उत्पादनासाठी लागणाऱ्या साधनांचा वापर न करू

शकणारा करस्कार म्हणजे अल्पभूधारक.”

1. “अकार्यक्षम धारण क्षेत्रात शेती कसणारा शेतकरी म्हणजे अल्पभूधारक.”
2. अल्पभूधारक म्हणजे कमी शेती असलेला शेतकरी होय.

अल्पभूधारक असणे म्हणजे एकप्रकारची मागास शेती असणे. त्या अल्पभूधारकतेतून उत्पन्न कमी प्राप्त होते. तसेच अल्पभूधारतेमुळे शेतकी कर्ज वाढते. मनुष्याच्या कार्यप्रवृत्तीस व नवीन सृजनात्मक शक्तीला अवरोध निर्माण होतो.

थोडक्यात, अल्पभूधारक म्हणजे कसण्यासाठी कमी जमीन उपलब्ध असलेल्या शेतकरी. या अल्पभूधारक स्थितीमुळे आर्थिक स्थिती उंचावता येत नाही.

**2) समस्यासूत्रण :**

कुठल्याही विषयातील संशोधन कार्याला सुरुवात करण्यागोदार त्या संशोधन विषयातील एखादी समस्येची निवड करवी ही लागत असते. तसेच त्या समस्याचे स्वरूप किती मोठे किंवा किती लहान आहे, यापेक्षा ती समस्या सद्यस्थितीला त्या समस्येचे परिणाम किती मोठे स्वरूपाचे आहे. अश्या प्रकारचा विचार केला जातो. संशोधन पद्धतीत समस्यासूत्रण ही महत्वाची पायरी मानली जाते. समस्यासूत्रण पद्धतीत प्रथम संशोधनाचे क्षेत्र व त्यानंतर संशोधनाची समस्या / स्थिती ही निश्चित केली जाते. प्रस्तुत संशोधनाचा विषय लक्षात घेत संशोधनाचा विषय “अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांच्या सामाजिक व आर्थिक स्थितीचा अभ्यास करणे.” यासाठी या विषयातील समस्या किंवा स्थिती लक्षात घेणे महत्वाचे आहे. “तळोंदे (दिगर)” या गावातील अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंब आणि त्यांची सद्यस्थिती त्यांना निर्माण होणाऱ्या सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रातील समस्या तसेच त्यांना शेतीतून मिळणारा आर्थिक मोबदला, त्यांचे कष्ट, मेहनत या घटकांना नवे स्वरूप देण्यासाठी अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांचा अभ्यास केला आहे. वरील संशोधनाचा या घटकांवर अभ्यास करण्यापूर्वी तेथील समाज, कौटुंबिक इ. घटकांवर होणारा परिणाम, या विषयाचे सविस्तर विवेचन व्हावे , म्हणून संशोधकाने अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांच्या सामाजिक व आर्थिक स्थितीचा अभ्यास हा केलेला आहे.

1. **संशोधन विषयाची निवड :**

भारत हा खेड्यांचा देश अशी देखील भारताची ओळख आहे. कारण ७०% लोक हे खेड्यांवर राहतात. आणि त्यांचा मुख्य व्यवसाय हा शेती आहे. म्हणून भारत हा कृषिप्रधान देश म्हणून देखील ओळखला जातो. या कृषिप्रधान देशातील संस्कृती, तेथील राहणीमनाचा दर्जा, तसेच येथील पीक घेण्याची पद्धत हे संपूर्ण जगाच्या दृष्टिकोनातून शेतीप्रधान म्हणून पहिले जाते. येथील शेती ही फक्त चांगले उत्पन्नाच्या दृष्टीणेच नाही, तर उदरनिर्वाह आणि पोटाची खळगी भरण्याचे साधन म्हणून देखील शेतीकडे पहिले जाते. अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांना भेदसावणाऱ्या सामाजिक, आर्थिक स्थितीचे अध्ययन या संशोधनपर विषयाची निवड करण्यामागचा उद्देश हाच आहे की, भारताने १९९१ साली जागतिकीकरण, उदारीकरण आणि खासगीकरण हे धोरण स्वीकारले. त्यामुळे अडीच एकर किंवा पाच एकर शेती क्षेत्र व विशिष्ट भांडवल यांच्या पलीकडे मंजुरीचा मार्ग अवलंबविला गेला. आणि याचा परिणाम शेतकरी कुटुंबावर पडत असतो.

भारत हा जरी कृषीप्रधान देश असला तरी देखील या घटकांसाठी राजकीय स्तरावर शेतीला अनुसरून शेतमालाला योग्य भाव, शेतकऱ्यांच्या कुटुंबीयांना मिळणारा आर्थिक आधार, व शेती ही निसर्गावर अवलंबून आहे. त्यामुळे सामाजिक किंवा आर्थिक हानी होऊ शकते. ग्रामीण भागाचा मुख्य व्यवसाय हा म्हणून शेतीकडे पाहिले जाते, व शेती हेच उत्पन्नाचे मुख्य साधन असून शासनाने ह्या भेडसावणाऱ्या समस्यांकडे व स्थिती यांच्यावर लक्ष्य वेधण्यासाठी संशोधकाने शेती हेच कुटुंबाचे सुख-दुख-उदरनिर्वाह या घटकांचे अध्ययन करण्यासाठी अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांच्या सामाजिक व आर्थिक स्थितीचे अध्ययन या विषयाची निवड केली आहे.

1. **संशोधनाचे महत्व :**

‘ग्रामीण भागात जन्मणाऱ्या लक्षावधी लोकांना शेती शिवाय पर्याय नाही. इतर उद्योगात जेवढ्या लोकांची आवश्यकता असते. तेवढेच लोक निवडले जातात. शेतीत निवडीचा प्रश्नच नसतो. निराधारांना-निर्वासितांना त्यांच्या दुर्धर(वाईट) काळात थोड्याफार प्रमाणात आधार देण्यास व त्यांचे पुनर्वसन करण्यास शेती असते. शेती ही जगातील लोकसंख्येचे रक्षण करणारे एक मोठी शक्ती आहे.’ हे शेतीविषयक ‘हॉवर्ड लुईस’ यांच्या मत बोलके ठरते. देशाचा आर्थिक विकास बहुतांश कृषिवरच अवलंबून आहे.

अल्पभूधारक आपल्या शेतीमध्ये नवीन तंत्रज्ञान, अवजारे, किटकनाशके व जलसिंचन या सारख्या साधनांचा वापर त्याला शक्य नसते. त्यामुळे अल्पभूधारकांची उत्पन्न पातळी इतर शेतकऱ्यांपेक्षा निम्न पातळीची असते. त्यांची आर्थिक स्थिती दयनीय स्वरूपाची असते. त्यामुळे अल्पभूधारकांच्या सामाजिक व आर्थिक स्थितीचा अभ्यास केल्यानंतर त्यांच्या समस्या जाणून घेता येतात. समस्येचे निराकरण करता येते. त्यांची शेतीतील उत्पन्न पातळी कशी वाढवता येते, नवीन उत्पन्नास तंत्राचा वापर कसा करावा या अनुषंगाने सुधारणा घडवून आणता येतात. शासकीय व लोकसहभागातून त्यांची आर्थिक स्थिती सुदृढ करता येते.

1. **संशोधनाचे उद्दिष्ठ्ये :**
2. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या आर्थिक स्थितीचे अध्ययन करणे.
3. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या सामाजिक स्थितीचे अध्ययन करणे.

3) अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या कौटुंबिक स्थितीचे अध्ययन करणे.

1. **संशोधनाची गृहितकृत्ये :**
2. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या आर्थिक स्थिती निम्न स्वरूपाची आहे.
3. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या सामाजिक जीवनाचा स्तर निम्न आहे.
4. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांची कौटुंबिक स्थितीत सुधारणा सौम्य स्वरूपाची आहे.
5. **संशोधन क्षेत्र :**

**भौगोलिक क्षेत्र**

चाळीसगाव तालुका हा जळगाव जिल्ह्यातील कृषी क्षेत्रासंदर्भात महत्वाचा तालुका आहे. इथे कृषी उत्पन्नावर आधारित बेलगंगा साखर कारखाना, चाळीसगाव कापड गिरणी, तेल व विड्यांचे कारखाने इ. इतर उद्योगांना चालना देण्याकरता इथे [महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळाचे](https://mr.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%9F%E0%A5%8D%E0%A4%B0_%E0%A4%94%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%97%E0%A4%BF%E0%A4%95_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B8_%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A4%B3) चाळीसगाव उद्योग क्षेत्र आहे. तसेच मक्यावर प्रक्रिया करून स्टार्च, लिक्विड ग्लुकोज बनविण्याचा कारखाना सुद्धा उभारण्यात आला आहे. चाळीसगाव व जवळपासच्या भागात शेती हा मुख्य धंदा आहे. [ऊस](https://mr.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%8A%E0%A4%B8), कपाशी व केळी ही मुख्य रोख पिके आहेत. येथे [भुईमुगाचीही](https://mr.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A5%81%E0%A4%88%E0%A4%AE%E0%A5%82%E0%A4%97) लागवड होते. [ज्वारी](https://mr.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80), [बाजरी](https://mr.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%B0%E0%A5%80) व [गहू](https://mr.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%97%E0%A4%B9%E0%A5%82) ही धान्येही घेतली जातात. बहुतांश शेती जिरायती आहे.

तसेच चाळीसगाव तालुक्याचा विकास हा राजकीय, सामाजिक, आर्थिक या दृष्टीने झालेला असला तरी तेथील खऱ्या विकासाची सुरुवात पार्श्वभूमी, समस्या व स्थिती ही खेड्यात गेल्यावरच कळतात. या उद्देशाने तळोंदे दिगर येथील स्थितीचे अभ्यास केलेल्या आहे. तळोंदे दिगर हे गाव चाळीसगाव तालुक्यापासून २१ किलोमीटर आहे. तसेच कृषि उत्पन्न बाजार समिती देखील चाळीसगाव येथेच आहे. तर जळगाव शहरापासून ११३ किलोमीटर आहे.

गावातील कृषिक्षेत्राचा विचार केले असता शासकीय आकडेवाडीनुसार गावाचे एकूण क्षेत्र हे १६७९.०९ हेक्टर आहे. पेरणीसाठी उपलब्ध क्षेत्र हे १४१३.०४ हेक्टर इतके आहे. त्यात सुमारे २२० हेक्टर हे सिंचन नसलेले क्षेत्र आहे. तसेच सुमारे ११९३.०४ हेक्टर हे सिंचन क्षेत्र आहे. कालव्याच्या पाण्याच्या सहाय्याने ६० हेक्टर हे सिंचन केले जाते. सुमारे १६० हेक्टर क्षेत्र हे विहिरी/ट्यूबवेलद्वारे सिंचन केले जाते.

त्याचप्रमाणे, १३२.३५ हेक्टर हे कायमस्वरूपी कुरण आणि चाराऊ जमीन म्हणून वापरली जाते. तसेच गावाच्या एकूण क्षेत्रफळापैकी ३.६८ हेक्टर हे सध्याच्या पडझरी व्यतिरिक्त पडीक जमीन आहे. व सुमारे १२९.६६ हेक्टर नापीक आणि शेती नसलेल्या जमिनीने व्यापलेले आहे.

थोडक्यात, गाव शिवारात लहान मोठे शेतकरी हे कापूस, ज्वारी, गहू, बाजारी, मका, ऊस हे पीक घेतले जाते. गावातील महत्वाचे म्हणजे अल्पभूधारक शेतकरी कापूस हे नगदी व्यापारी पीक घेऊन आपल्या कुटुंबाचा उदरनिर्वाह करतात.

**दळणवळण :**

गावातील कृषि उत्पन्न आणि वाहतूक यासाठी पायाभूत सुविधांमधील रस्त्याची भूमिका ही महत्वाची असते. तळोंदे दिगर गाव शिवारातील रस्ते समाधानकारक स्वरूपाचे आहेत. तसेच गावाहून ०५ किलोमीटर अंतरावर चाळीसगाव-नाशिक या शहरांना जोडणारा पक्का रस्ता उपलब्ध आहे. साधारणतः शेतीविषयक साधनांमध्ये दुचाकी, ट्रक, ट्रॅक्टर या साधनांचा वापर होतो.

1. **संशोधन विश्वव्याप्ती :**

संशोधन करीत असतांना संशोधनाचे क्षेत्र निश्चित करणे हे खूप आवश्यक असते. सध्य स्थितीच्या काळाच्या ओघात अल्पभूधारक शेती संकल्पना, शेतकरी कुटुंबाची स्थिती आणि शेतीविषयक धोरण यामुळे समाजातील परिस्थिती खूपच व्यापक स्वरूपाची होत असल्याची दिसून येते. परंतु संशोधकाने संशोधनासाठी भौगोलिक परिस्थितीचा विचार करून तळोंदे दिगर ता. चाळीसगाव. येथील अल्पभूधारक शेतकऱ्यांचे सामाजिक व आर्थिक स्थितीचा अभ्यास करण्यासाठी हे संशोधन विश्व निवडले आहे. या संशोधन अभ्यासाचे क्षेत्र हे तळोंदे दिगर या गावापुरतेच मर्यादित आहे. परंतु त्याविषयी संदर्भ हे सर्व अल्पभूधारक शेतकऱ्यांना लागू होतात. तळोंदे दिगर हे छोटेसे गाव आहे. या गावातील अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंब, त्यांचे शेतीविषयक मत आणि सध्यस्थिति हे संशोधकाचे क्षेत्र आहे. तसेच सदर संशोधनाची व्याप्ती ही तळोंदे दिगर या गावापुरतीच मर्यादित आहे.

1. **संशोधन आराखडा :**

संशोधन करत असतांना सर्वप्रथम संशोधनाचा आराखडा तयार करावा लागतो. संशोधन आरखडयाचे चार प्रमुख प्रकार पडतात. (१) अन्वेषणात्मक संशोधन आराखडा (२) निदानात्मक संशोधन आराखडा (३) वर्णनात्मक संशोधन आराखडा (४) प्रयोगात्मक संशोधन आराखडा.

कारण यामुळे संशोधन करतांना त्या कार्यास नीटनेटकेपणा / सुसज्जता आणि व्यवस्थितपणा येतो. यासाठी सदर संशोधनातील अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबांची सामाजिक व आर्थिक स्थितिचे अध्ययन करण्यासाठी **“वर्णनात्मक संशोधन आराखडा”** याचा वापर केला आहे.

**व्याख्या :**

संशोधन आराखडयाशिवाय वस्तुनिष्ठ संशोधन करणे अशक्य आहे. संशोधन आराखडयाचा अर्थ स्पष्ट् करण्यासाठी त्या संबंधित काही व्याख्यांचा विचार करणे आवश्यक आहे. त्या पुढील प्रमाणे,

* **एफ एन करलिंगर यांच्या मते,**

“संशोधन आराखडा, संशोधनाची एक योजना, संरचना आणि एक अशी रणनीती आहे. ज्याद्वारे संशोधन प्रश्नाची उत्तरे प्राप्त केली जातात आणि भिन्नत्व प्रसारणावर नियंत्रण ठेवले जाते.”

* **एकॉक (R. L. Ackoff) यांच्या मते,**

“निर्णय कार्यान्वित करण्याची स्थिती येण्यापूर्वी व निर्णय निर्धारित करण्याच्या प्रक्रियेला आराखडा असे म्हणतात.”

1. **नमूना निवड पद्धती :**

कोणत्याही संशोधनाची काही प्रमुख मर्यादा असतात. त्याच प्रमाणे सामाजिक संशोधाची प्रमुख मर्यादा अशी आहे की, ज्या समस्या, स्थितीचा किंवा घटनेचा अभ्यास करायचा आहे. त्यांची व्याप्ती इतकी प्रचंड आहे की, त्या घटकांचा अभ्यास करणे कोणत्याही संशोधकाच्या आवाक्याबाहेरची बाब आहे. कोणत्याही विषयासंबंधी सर्वच व्यक्तीकडून माहिती संकलित करणे आवश्यक असते.

एका घटकचा अभ्यास करायचा झाल्यास सर्वच घटकांचा अभ्यास करणे हे गरजेचे असते. वेळ, श्रम, कार्यक्षमता, पैसा यांचा विचार करतांना संशोधकाच्या मनात फार मोठ्या प्रमाणावर विचारांचा गोंधळ होण्याची शक्यता असते. यासाठी नमूना निवड पद्धतीचा मार्ग हा उत्तम मानला जातो.

**व्याख्या :**

**श्रीमत पॉलिन यंग :**

ज्या समग्रातून नमूना निवडलेला असतो त्या समग्राचे लहान चित्र म्हणजे नमूना होय.

**साधा यादृच्छिक नमुना निवड (रँडम सॅम्पल मेथड) :**

संशोधकाने सदर संशोधन विषयात संभाव्य नमूना निवड पद्धतीतील साधा यादृच्छिक नमूना निवड पद्धतीचा उपयोग केला आहे.

या प्रकारामध्ये लोकसंख्येतील प्रत्येक एककास (व्यक्तीस) नमुना निवडीमध्ये निवडले जाण्याची समान संभाव्यता/शक्यता असते. यामध्ये कोणताही पूर्वग्रह न ठेवता, जाणीवपूर्वक निवड न करता रँडम पद्धतीने नमुना ठरविला जातो. यामुळे लोकसंख्येतील सर्व व्यक्तींना नमुन्यामध्ये समाविष्ट होण्याची सामान संधी राहते. म्हणूनच या पद्धतीला यादृच्छिक नमूना निवड पद्धत असे म्हणतात. ही पद्धत अतिशय शास्त्रशुद्ध आहे. संशोधकाने ५० अल्पभूधारक शेतकऱ्यांची निवड माहिती संकलणासाठी करण्यात आलेली आहे.

1. **तथ्य संकलन पद्धती :**

कोणत्याही सर्वेक्षण किंवा संशोधनासाठी माहिती संकलन आवश्यक असते. संशोधन विषयाशी संबंधित तथ्ये विशिष्ट पद्धतींचा वापर करून एकत्रित केल्याशिवाय, संशोधनाच्या आधारे कोणतेही निष्कर्ष काढता येत नाहीत किंवा नियम बनवता येत नाहीत.

1. **प्राथमिक तथ्य संकलन पद्धती :**

**मुलाखत अनुसूची :**

तथ्य संकलन करण्यासाठी मुलाखत अनुसूचीचा वापर मोठ्या प्रमाणात होतो. संशोधनकर्ता प्रत्येक निवेदकला भेटून त्याची मुलाखत घेतो. प्राथमिक पद्धत अधिक चांगल्या प्रकारे समजून घेण्यासाठी, आपण असे म्हणू शकतो की, जेव्हा संशोधक स्वतः त्याच्या अभ्यास क्षेत्राच्या किंवा संचाच्या अभ्यास घटकांशी संपर्क साधून तथ्ये गोळा करतो, तेव्हा त्याला तथ्य संकलनाचा प्राथमिक पद्धत असे म्हणतात. शिक्षित, अशिक्षित व निरीक्षर व्यक्तिकडून माहिती गोळा करण्यासाठी ही पद्धत महत्वाची आहे. या अंतर्गत, संशोधकाला त्याच्या अभ्यास क्षेत्रात कार्यक्षमतेने काम करावे लागते आणि चर्चा, निरीक्षण, प्रश्नावली, मुलाखतीचे वेळापत्रक इत्यादी. पद्धतींद्वारे त्याच्या संशोधनाशी संबंधित माहिती देखील संकलित करावी लागते.

**ब) दुय्यम तथ्य संकलन पद्धती :**

व्यक्तिकडून, संस्थेकडून संशोधकाला जे तथ्य मिळतात, त्याला दुय्यम पद्धत असे म्हणतात. त्यामध्ये प्रामुख्याने अ) व्यक्तिगत कागदपत्रे व ब) सार्वजनिक कागदपत्रे येतात.

प्राथमिक तथ्य ही स्वतः संशोधनकर्ता संकलित करतो. परंतु दुय्यम पद्धतीत मात्र संशोधनकर्ता स्वतः संशोधन क्षेत्रात जाऊन संबंधित व्यक्तिकडून माहिती गोळा करीत नाही. त्यामध्ये प्रामुख्याने प्रकाशित व अप्रकाशित प्रलेख, अहवाल, सांख्यिकी, हस्तलिखित, पत्रे, दैनंदिनी इत्यादीपासून संशोधनकर्ता माहिती गोळा ही करत असतो.

1. **तथ्य विश्लेषण :**

सामाजिक संशोधनात तथ्यांचे संकलन केल्यानंतर त्यांचे विश्लेषण करणे आवश्यक आहे. जोपर्यन्त तथ्यांचे विश्लेषण हॉट नाही तोपर्यंत ते तथ्य अर्थहीन असतात. परंतु विश्लेषण आणि विश्वसनीय तथ्यांना एक वेगळा अर्थ प्राप्त होतो. यशस्वी सामाजिक संशोधनासाठी उपयुक्त आणि विश्वसनीय तंत्राद्वारे तथ्य संकलित करणे आवश्यक आहे. त्याचप्रमाणे तथ्यांचे विश्लेषण कशाप्रकारे केले जाते हे देखील महत्वाचे आहे. कारण त्याशिवाय संकलित केलेल्या तथ्यांचे महत्त्व लक्षात येणार नाही.

* 1. **तथ्य संपादन :**

तथ्यांचे परीक्षण करून त्यातील त्यातील निर्णय त्रुटि दूर करणे म्हणजे तथ्यांचे संपादन होय. संकलित केलेल्या तथ्यांचे सूक्ष्म निरीक्षण करून, त्यामध्ये काही चुका आणि अपूर्णतः राहिली काय ? हे लक्षात घेतले जाते. इ. कार्य संशोधकास योग्य माहिती उपलब्ध व्हावी यासाठी तथ्य संपादन केले जाते.

* 1. **वर्गीकरण :**

मुलाखत अनुसूचिमध्ये जे प्रश्न असतात. त्या प्रश्नांना वेगवेगळ्या प्रकारची माहिती, विशिष्ठ्य व मोजक्या गटात संकलित केली जाते. त्यांना वर्गीकरण असे म्हणतात.

* 1. **संकेतीकरण :**

तथ्यांचे वर्गीकरण केल्यानंतर त्यांचे संकेतीकरण केले जाते. संकेतीकरण म्हणजे मोठ-मोठ्या वर्णनात्मक उत्तरांना संकेत किंवा प्रतिष्ठाद्वारे व्यक्त केल्या जाते.

* 1. **सारणी विश्लेषण :**

विश्लेषण सुलभ व्हावे म्हणून तथ्यांच्या सारण्या तयार केल्या जातात. गणनात्मक तथ्यांना व्यवस्थित व वैज्ञानिक पद्धतीने एक सारणी किंवा तक्ताअंतर्गत प्रदर्शित करणे म्हणजे सारणीकरण होय. सारणीकरणामुळे क्लिष्ट तथ्य सहजपणे लक्षात येतात.

* 1. **अहवाल लेखन :**

संशोधन अहवाल लेखन म्हणजे संशोधन कार्य पूर्ण केल्याची पावती आहे. या अहवालाचा उपयोग समान परिस्थितीत संशोधन करणा-यांना होऊ शकतो. या संशोधनातून प्राप्त झालेली फलिते, त्यांचे निष्कर्ष व केलेल्या शिफारशी इतरांना कळाव्यात यासाठी अहवाल लेखन हे महत्वपूर्ण मानले जाते.

संशोधन अहवाल हे संशोधक किंवा सांख्यिकीशास्त्रज्ञांनी आयोजित केलेल्या माहितीचे विश्लेषण करून, विशेषत: सर्वेक्षणे किंवा गुणात्मक पद्धतींच्या स्वरूपात तयार केलेले डेटा रेकॉर्ड केले जातात.

* 1. **आलेखीकरण :**

प्रस्तुत शोधप्रबंध हा सर्वांना समजण्यासाठी सोपा जावा, यासाठी सादर संशोधनात आकृत्या व आलेख यांचा उपयोग करण्यात आलेला आहे. निरक्षर व्यक्तीला देखील संशोधनात काय मांडण्यात आलेल आहे, याची माहिती घेण्यासाठी सदारच्या संशोधनात आवश्यक ठिकाणी आकृत्या व आलेख यांचा उपयोग करण्यात आला आहे.

1. **संशोधनाची मर्यादा व अडचणी :**
   1. वेळ व पैशांची अडचण भासेल.
   2. निवेदक वेळेवर मिळतील असे नाही.
   3. तथ्य संकलन करण्यास अडचण येऊ शकते.
   4. विषयाला अनुसरून माहिती मिळवण्यासाठी विविध अडचणींना सामोरे जावे लागेल.
   5. निवेदकाच्या सवडीनुसार / वेळेनुसार अनुसूची भरावी लागेल.
2. **प्रकरणीकरण :-**

प्रकरण पहिले : प्रस्तावना

प्रकरण दुसरे : संशोधन पद्धती

प्रकरण तिसरे : संशोधन साहित्याचा आढावा

प्रकरण चौथे : तथ्य विश्लेषण व निर्वचन

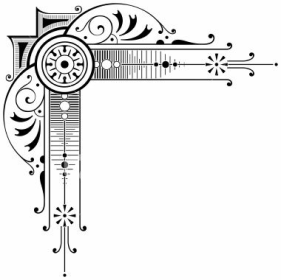
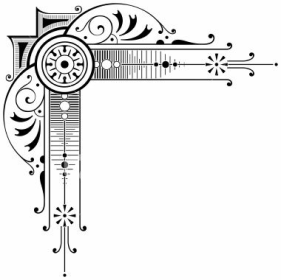
प्रकरण पाचवे : निष्कर्ष, गृहीतकृत्यांची पडताळणी व सूचना अ) निष्कर्ष

ब) गृहीतकृत्यांची पडताळणी

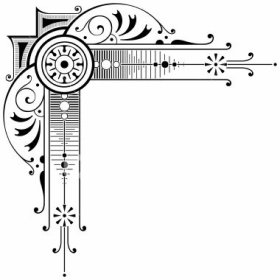
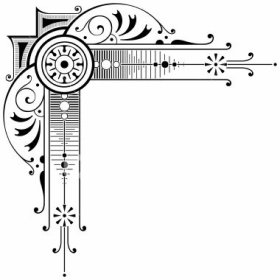
क) सूचना

परिशिष्ट : अ) मुलाखत अनुसूची

ब) संदर्भ ग्रंथ सूची



**प्रकरण ३ रे**

**संशोधन साहित्याचा आढावा**

**प्रकरण 3 रे**

**संशोधन साहित्याचा आढावा**

# **डॉ. मारूती कुसमुडे, धरलं तर चावतंय आणि सोडलं तर पळतय, दैनिक देशदूत, दि. २८ जुलै २०२०.**

# धारण म्हणजे साधारणपणे एखाद्या शेतकऱ्याच्या वाट्याला किंवा हिस्याला असणारी जमीन. थोडक्यात त्या शेतकाऱ्याच्या नावावर असणारी जमीन. जमिनीचे मोजमाप साधारणपणे गुंठे, एकर आणि हेक्टरमध्ये केले जाते. दहा मीटर रुंदी गुणिले दहा मीटर लांबी अशा एकूण शंभर चौरसमीटर क्षेत्रफळाला एक गुंठा असे म्हणतात. अशा ४० गुंठयाचे एक एकर होते. आणि १०० गुंठयाचे म्हणजेच अडीच एकरांचा एक हेक्टर होते.

भारतात जमिन धारणेवरुण शेतकऱ्यांचे पाच गटांत वर्गीकरण केले जाते. एक हेक्टरपेक्षा कमी धारणक्षेत्र असलेले अल्पभूधारक शेतकरी, १ ते २ हेक्टर पर्यंत धारण क्षेत्र असलेले छोटे शेतकरी, २ ते ४ हेक्टर दरम्यान धारणक्षेत्र असलेले अर्धमध्यम शेतकरी, ४ ते १० हेक्टर धारणक्षेत्र असलेले मध्यम शेतकरी आणि अधिक धारण क्षेत्र असलेले मोठे शेतकरी असे पाच गट आहेत.

भारत सरकारच्या कृषी मंत्रालयाने प्रसिद्ध केलेल्या अहवालानुसार, १९८०-८१ मध्ये भारतातील सीमांत आणि अल्पभूधारक शेतकऱ्यांची एकूण संख्या अनुक्रमे ५६.४ टक्के आणि १८.१ टक्के होती. म्हणजेच १९८०-८१ मध्ये भारतातील ७४.५ टक्के शेतकऱ्यांकडे पाच एकरपेक्षा कमी जमीन होती. एकूण कार्यक्षम जमिनीचा विचार केल्यास अल्पभूधारक शेतकऱ्यांकडे १२.१ टक्के आणि लहान शेतकऱ्यांकडे १४.१ टक्के अशी एकूण केवळ २६.२ टक्के जमीन होती.

२०१०-११ मध्ये भारतात ६७.१ टक्के अल्पभूधारक आणि १७.९ टक्के अल्पभूधारक ८५ टक्के शेतकऱ्यांकडे पाच एकर किंवा दोन हेक्टरपेक्षा कमी जमीन आहे. २०१०-११ मध्ये अल्पभूधारक शेतकऱ्यांकडे २२.५ टक्के तर लहान शेतकऱ्यांकडे २२.१ टक्के हिस्सा होता.

थोडक्यात १९८०-८१ मध्ये ७४.५ टक्के अल्पभूधारक व लघुशेतकरी २६.२ टक्के आणि २५.५ टक्के अर्धमध्यम, मध्यम व मोठ्या शेतकऱ्यांकडे केवळ ७३.८ टक्के शेती होती. २०१०-११ मध्ये अल्पभूधारक व लघु शेतकऱ्यांच्या संख्येत ८५ टक्क्यांनी वाढ झाली असून एकूण कार्यक्षम जमिनीमध्ये त्यांचा वाटा ४४.६ टक्के होता. म्हणजे उर्वरित १५ टक्के अर्धमध्यम, मध्यम आणि मोठ्या शेतकऱ्यांकडे एकूण धारण क्षेत्रापैकी ५५.४ टक्के जमीन होती.

शेतजमिनीचे हे विभाजन इथेच थांबत नाही, तर वारसा कायदा आणि जमिनीचे विभाजन झाल्यानंतर जमिनीचे तुकडीकरण झाल्यामुळेही थांबते. विखंडन म्हणजे काय? हे एका उदाहरणाच्या साहाय्याने समजू शकते. “समजा एका शेतकऱ्याला दोन एकर जमीन मिळाली. याचा अर्थ असा नाही की तो सलग दोन एकरांचा तुकडा असेल. ते एक एकराचे दोन तुकडे किंवा २०-२० गुंठयाचे चार तुकडे असू शकतात. किंवा इतर मार्गांनी छोटे तुकडे असू शकतात. जमिनीचे असे विखंडन आणि विखंडन शेतीच्या उत्पादकतेवर विपरीत परिणाम करते.”

कारण असे छोटे छोटे तुकड्यांचे मशागत अनंत अडचणी येतात. कमी धारणक्षेत्र, कमी उत्पादनामुळे शेतकऱ्यांचे उत्पन्न कमी, कमी उत्पन्नामुळे शेतकऱ्यांची कमी बचत, कमी बचत म्हणून शेतीत कमी भांडवली गुंतवणूक आणि पुन्हा कमी भांडवली गुंतवणूक यामुळे उत्पादन कमी आहे. पिढ्यानपिढ्या शेतकरी अशा दुष्टचक्रात अडकला आहे. त्यामुळे भारतातील सीमान्त व अल्पभूधारक शेतकऱ्यांना किफायतशीर पद्धतीने शेती करणे शक्य नाही आणि शेती सोडुन देणेही जमत नाही. त्यामुळे सीमान्त व अल्पभूधारक शेतकऱ्यांची अवस्था 'सुटका झाली तर पकडणे आणि पळून जाणे' अशी झाली आहे. वाढत्या लोकसंख्येमुळे ही समस्या अधिकाधिक गंभीर होत चालली आहे.

भारतात सुमारे ८५ टक्के शेतकरी हे अल्प व अल्पभूधारक शेतकरी आहेत. अशा शेतकऱ्यांची शेतजमीन आकाराने अतिशय लहान असल्याने त्या शेतजमिनीचे उत्पादन व उत्पन्नही इतके कमी असते की शेतकरी कुटुंबाचे उत्पन्न नीट चालत नाही. याशिवाय शेती हा निसर्गाशी खेळला जाणारा जुगार आहे. त्यामुळे थोडी रक्कम मिळेलच पण उत्पन्न मिळेलच याची शाश्वती नाही.

मिळालेल्या उत्पन्नातील किती रक्कम कुटुंबाच्या उदरनिर्वाहावर खर्च करायची आहे? आपल्या मुलांच्या शिक्षणावर खर्च करण्यासाठी आणि पुढील पिकांच्या लागवडीसाठी आणि इतर कारणांसाठी शेतीत किती ठेवावे यासाठी अनेक शेतकरी वर्षानुवर्षे धडपडत आहेत. त्यामुळे एकीकडे शेतकऱ्यांना शेतीतून पुरेसे उत्पन्न मिळते, ते कर्जबाजारी होऊन दारिद्र्याच्या दुष्टचक्रात अडकतात आणि दुसरीकडे शेतीसाठी आवश्यक भांडवली गुंतवणुकीअभावी शेतीची उत्पादकता आणि कृषी विकासात अडचणी निर्माण होतात. शेतकऱ्यांच्या पुढाकाराने शेतकरी चालवणाऱ्या सह्याद्री फार्म या शेतकरी उत्पादक कंपनीचे व्यवस्थापकीय संचालक विलास शिंदे एका मुलाखतीत सांगतात की, शेती म्हणजे दहा तोंडाच्या रावणाशी लढण्यासारखं आहे. म्हणूनच भारतातील अल्पभूधारक व लहान शेतकऱ्यांना एकत्र आणून सामूहिक शेतीच्या माध्यमातून या समस्यांवर उपाय शोधणाऱ्या प्रामाणिक, सुशिक्षित आणि होतकरू तरुणांची कृषी क्षेत्राला नितांत गरज आहे.

**२) अश्विनी** **कुलकर्णी, “छोटय़ा शेतकऱ्यांना ‘हमी’ हवी..” लोकसत्ता वृत्तपत्र, दि. ०१ जुलै २०१५.**

अल्पभूधारक- म्हणजे अर्धा एकर ते पाच एकरापर्यंत शेती कसणाऱ्या शेतकऱ्यांपैकी ४० टक्क्यांहून अधिकांच्या शेतांमध्ये सिंचनाची सोय नाही.. म्हणजे त्यांची शेती पावसावर आणि भूजलावरच अवलंबून. अशा शेतकऱ्यांना केंद्रस्थानी ठेवून पाणलोट विकासाची कामे हाती घेतल्यास भूजल पातळी वाढू शकते, हे याआधी वारंवार सिद्ध झालेले आहे. ‘नरेगा’तून ही कामे करण्याचे नियोजन आतापासूनच सुरू करायला हवे, असे आजपासून सुरू होत असलेल्या ‘कृषी जागृती सप्ताहा’निमित्त सागणारी नोंद..

मोसमी पावसाचे जूनमध्ये राज्यात सर्वदूर झालेले आगमन सुखावह आहे. पण यंदा पाऊस कमी असेल, जुलै कोरडा जाणार, या हवामान खात्याच्या अंदाजामुळे दुष्काळाच्या भीतीचे ढगही दिसत आहेत आणि त्याने अंधारून आले आहे. परत चर्चा कृत्रिम पाऊस, त्याचे नवीन तंत्रज्ञान वगरे, चर्चा अर्धवट झालेल्या सिंचन प्रकल्पांची, चर्चा वाढणाऱ्या टँकरावलंबी गावांची; चारा छावण्यांची आणि पुढे, अन्नधान्य-भाजीपाला यांच्या महागाईची..

महाराष्ट्र राज्यनिर्मितीनंतर यशवंतराव चव्हाण, वसंतराव नाईक असे शेतीचा विचार करणारे मुख्यमंत्री असूनही बहुसंख्य शेतकऱ्यांच्या चार पिढय़ा सिंचनाची वाट पाहण्यात गेल्या. प्रत्येक नव्या सरकारागणिक सिंचन प्रकल्पांची चर्चाच खूप, पाणी काही पोहोचत नाही. एक तर प्रकल्प सुरूच झालेले नाहीत, सुरू झालेले पूर्ण झाले नाहीत आणि पूर्ण झाले तरी कालवे नाहीत अशी अवस्था आहे.

मूळ प्रश्न आहे पाणीटंचाईचा. ‘ही समस्या सोडवणे अवघड मुळीच नाही, हे दुष्टचक्र भेदणे अशक्य नाही,’ असे कोणी म्हटले तर खरे वाटणार नाही. पण सत्य हे आहे की हे सहज शक्य आहे, हे या राज्यातील अनेक गावांनी दाखवून दिले आहे. ‘कमी पाऊस म्हणजे पाणीटंचाई’ असे जणू एक समीकरण झालेले आहे. हेच समीकरण खोटे ठरवणारे यशस्वी अनुभव महाराष्ट्राला नवीन नाहीत.

नांदेड जिल्ह्यात सलग दोन-चार वष्रे जेव्हा जल संधारण व मृद संधारणाची कामे गावोगावी झाली, तेव्हा भूगर्भातील पाण्याची पातळी नऊ मीटरने वाढली, असे शासनानेच त्यांच्या अहवालात मांडले आहे. दोन वर्षांपूर्वीच्या दुष्काळात जेव्हा आसपासच्या गावात टँकर चालू होता, तेव्हा जालना जिल्ह्याच्या भोकरदन तालुक्यातील काही गावांत विहिरींमध्ये भर उन्हाळ्यात पाणी होते. याचे कारण म्हणजे या गावांनी रोजगार हमी योजनेची प्रभावी अंमलबजावणी केली. पण रोजगार हमी योजना, म्हणजे आताची ‘नरेगा’ ही महाराष्ट्राला काही नवीन योजना नाही.

महाराष्ट्राच्या एकूण शेतजमीन धारकांपैकी ७९% शेतकऱ्यांकडे पाच एकरपेक्षा कमी शेतजमीन आहे. यापैकी ४३ टक्के शेतीला अंशतसुद्धा सिंचनाची सोय नाही, ही शेतजमीन पूर्ण कोरडवाहू आहे. याचा अर्थ, पावसावरच भरवसा असलेले बहुतेक शेतकरी हे कमी जमीनधारणा असलेले आहेत. छोटय़ा शेतकऱ्यांपर्यंत सिंचनाची सोय कमीतकमी पोहोचली आहे. हे वास्तव भीषण आहे.

दुष्काळाच्या वर्षांत या कमी अल्पभूधारक शेतकऱ्यांचे हाल अधिकच तीव्र होतात, हे तर स्पष्टच आहे. ‘नरेगा’तून झालेली कामे ही यावरचा एक ठोस उपाय ठरली आहेत. खरे तर दुष्काळी स्थितीमुळेच ‘रोहयो’ महाराष्ट्रात प्रथम राबवण्यात आली, याच राज्याने ही योजना पूर्ण देशाला दिली. पण आपले राज्यकत्रे मात्र या योजनेकडे राज्याला दुष्काळमुक्त करून पाण्याचा प्रश्न सोडवणारी योजना म्हणून पाहात नाहीत.

इंडियन इन्स्टिटय़ूट ऑफ सायन्स (बंगळुरू) या संस्थेच्या अभ्यासातून ‘नरेगा’चे शेती विकासातील महत्त्व अधोरेखित झालेले आहे. या संस्थेची निरीक्षणे सांगतात की, नरेगाच्या कामांमुळे भूगर्भातील पाण्याची पातळी लक्षणीय वाढली आहे, सिंचनासाठी पाण्याची उपलब्धता वाढली आहे, ओलिताखालील शेतजमीन वाढली आहे आणि एकूणच गावकऱ्यांसाठी व जनावरांसाठी पिण्याच्या पाण्याची उपलब्धता वाढली आहे. हा अभ्यास देशभरातील दाखले देतो. त्याचप्रमाणे अनेक शास्त्रोक्त अभ्यासातून शेती विकासाला ‘नरेगा’ची चालना मिळाली आहे, हे स्पष्टपणे पुढे येत आहे.

हे भारतभरातील अभ्यास आहेत; परंतु तसाच खास महाराष्ट्रातील ‘नरेगा’च्या कामांचा, त्या कामांच्या शेतीसाठी उपयुक्ततेचा अभ्यास इंदिरा गांधी इन्स्टिटय़ूट ऑफ डेव्हलपमेंट सायन्स, मुंबई (कॅकऊफ) या संस्थेने मागील वर्षी केला.

या अभ्यासातून असे दिसते की, राज्यात ‘नरेगा’ची ७५ टक्के कामे ही जल संधारण व मृद संधारणाशी निगडित झालेली आहेत. फक्त सात टक्के कामे रस्त्यांची आहेत. सार्वजनिक पाणी साठवणीचे काम झाल्यास, सरासरी २२ एकर शेतजमीन व १५ शेतकरी कुटुंबांना त्याचा लाभ झालेला आहे. एकूण लाभधारकांची सरासरी शेतजमीन धारणा चार एकर एवढी दिसते व एकंदर लाभधारकांपैकी ९२ टक्के कुटुंबांचा प्रमुख व्यवसाय शेती हाच आहे. झालेल्या कामांचा सर्वात जास्त फायदा अर्धा एकर ते ५ एकर शेतजमीनधारक कुटुंबांना झालेला आहे. या अभ्यासातील लाभधारक हे ‘नरेगा’वरील मजूर असतीलच असे नाही, परंतु ‘नरेगा’तून निर्माण झालेल्या साधनसंपत्तीचे ते वापरकत्रे आहेत, हाच त्यांच्या निवडीचा प्रमुख निकष होता.

**३) रमेश पाध्ये, बहरू शकतो रोजगाराचा ‘मळा’, दैनिक सकाळ, दि. १६** **जानेवारी २०१७.**

देशातील सीमान्त आणि अल्पभूधारक शेतकरी म्हणजे ज्यांच्या शेताचे आकारमान दोन हेक्‍टरपेक्षा कमी आहे, त्यांना शेती क्षेत्रात पुरेसे काम मिळत नाही. परिणामी, त्यांना पुरेसे म्हणजे निर्वाहापुरते उत्पन्नही मिळत नाही. ही स्थिती लक्षात घेऊन अशा लोकांना औद्योगिक वा सेवा अशा क्षेत्रात सामावून घेण्यासाठी प्रयत्न करण्याची गरज सर्व जण प्रतिपादन करतात; परंतु शेती क्षेत्रामधील अतिरिक्त मनुष्यबळ नजीकच्या भविष्यातच नव्हे, तर पुढील १०+१२ वर्षांच्या काळात शेती क्षेत्राबाहेर सामावले जाऊ शकणार नाही, ही वस्तुस्थिती आहे. कारण, सुमारे १४ कोटी शेतकऱ्यांच्या कुटुंबांतील सीमांत व अल्पभूधारक शेतकऱ्यांची टक्केवारी ही ८५ आहे. त्यामुळे सुमारे १२ कोटी शेतकऱ्यांना शेती क्षेत्राबाहेर रोजगार उपलब्ध करून देण्याचे काम असाध्य ठरणार आहे; परंतु असे असाध्य प्रयत्नांची पराकाष्ठा करून तडीस नेले, तर त्याचा एकूण अर्थव्यवस्थेवर काय परिणाम होईल, याचाही विचार करायला हवा.

आजच्या घडीला कृषी हंगामात शेतावर काम करण्यासाठी पुरेसे मनुष्यबळ उपलब्ध होत नाही, अशी तक्रार देशाच्या पातळीवर बरेच शेतकरी करतात. स्वतःच्या शेतावर पुरेसे काम नसणारे सीमांत व अल्पभूधारक शेतकरी कृषी हंगामात दुसऱ्याच्या शेतावर मजुरी करतात. यामुळेच कृषी उत्पादनाचे काम निर्धोकपणे सुरू आहे. एकदा हे वास्तव लक्षात घेतले की, शेती क्षेत्रामधील ८५ टक्के मनुष्यबळ कमी झाले, तर शेती व्यवस्थेची पुरी वाताहत होईल, हे तर ओघानेच आले; पण त्याचबरोबर देशातील सीमांत व अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या मालकीची ४४.५८ टक्के शेतजमीन पडीक राहण्याचा धोका संभवतो. कारण, अशा शेतकऱ्यांना कृषी क्षेत्राबाहेर रोजगार मिळाला तरी, ते आपल्या मालकीचा जमिनीचा तुकडा विकून टाकणार नाहीत. गेल्या २०-२५ वर्षांत जमिनीचे भाव गगनाला भिडल्यामुळे जमिनीवरील आपला हक्क अबाधित ठेवण्यासाठी आता सर्वच जमीनमालक प्रयत्नांची शिकस्त करतात. तसेच ‘कसेल त्याची जमीन’, या कायद्याच्या बडग्यामुळे ते ती दुसऱ्या शेतकऱ्याला खंडाने कसायला देणार नाहीत. या प्रकारांमुळे देशातील सुमारे ४५ टक्के उपजाऊ जमीन पडीक राहिली तर धान्योत्पादनाची स्थिती काय होईल?

देशातील सुमारे ४५ टक्के उपजावू जमीन पडीक झाली, तर गेली २५-३० वर्षे परिश्रम करून धान्याच्या उपलब्धतेच्या संदर्भात जी काही स्वयंपूर्णता आपण निर्माण केली आहे, ती चुटकीसरशी संपुष्टात येईल. सव्वाशे कोटी लोकसंख्या असणाऱ्या देशाला असे होणे आर्थिक व राजकीयदृष्ट्या परवडणार नाही. या साऱ्या बाबी विचारात घेऊन देशातील सर्व सीमांत आणि अल्पभूधारक शेतकऱ्यांचा विचार करून अशा गरीब शेतकऱ्यांचे उत्पादन दुप्पट वा तिप्पट करण्यासाठी कृषी विकासाचा कार्यक्रम निश्‍चित करायला हवा.

शेती क्षेत्रामधील सर्व गरीब शेतकऱ्यांना शेती क्षेत्राबाहेर स्थिरस्थावर करणे आर्थिक व राजकीय कारणांसाठी जसे योग्य होणार नाही, तसेच आजच्या परिस्थितीत ते शक्‍यही होणार नाही. आज जगात इतरत्र आणि भारतात सुरू असणारी आर्थिक विकासाची प्रक्रिया विचारात घेतली, तर औद्योगिक विकासाची प्रक्रिया गतिमान झाली, तरी त्यामुळे उत्पादनातील वाढीच्या प्रमाणात रोजगार वाढत नाहीत, ही वस्तुस्थिती आहे. कारण, आधुनिक उद्योगात उत्पादनासाठी स्वयंचलित यंत्रे आणि यंत्रमानव (रोबो) यांचा मोठ्या प्रमाणावर वापर सुरू झाला आहे. तसेच संगणकाच्या वाढत्या वापरामुळे सेवा क्षेत्रातील रोजगार वाढण्याची प्रक्रिया मंदावली आहे. पूर्वीची स्थिती अशी नव्हती. त्यामुळेच रोजगारनिर्मितीबाबत आता तळ्यात की मळ्यात,असा संभ्रम नकोच. ती शक्‍यता मळ्यातच शोधायला हवी.

आज जगामध्ये विकसित म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या देशांनी शे-दीडशे वर्षांपूर्वी औद्योगिकीकरणाची कास धरली, तेव्हा त्यांच्या कारखान्यात तयार होणारे वाढीव उत्पादन विकण्यासाठी त्यांना अविकसित देशांतील त्यांच्या वसाहतींची हुकमी बाजारपेठ उपलब्ध होती. उदाहरणार्थ, १९ व्या शतकात व  २० व्या शतकाच्या पूर्वार्धात मॅंचेस्टरमध्ये तयार होणाऱ्या अतिरिक्त कापडाची विक्री करण्यासाठी इंग्लंडला भारतीय बाजारपेठ खुली होती. भारतावर इंग्लंडची अधिसत्ता असल्यामुळे इंग्लंडमध्ये पोलादाचे अतिरिक्त उत्पादन झाले की ते रिचविण्यासाठी ते भारतात रेल्वे विस्ताराचा धडाकेबंद कार्यक्रम आखू शकत होते. आज विकासाच्या मार्गाने नव्याने वाटचाल करू इच्छिणाऱ्या देशांसाठी अशी वसाहतींची हुकमी बाजारपेठ अस्तित्वात नाही. कारण, विसाव्या शतकाच्या मध्यावर वसाहतवादाचा अंत झाला आहे. त्यामुळे हुकमी बाजारपेठ ही संकल्पना लयाला गेली आहे. आज जागतिक बाजारपेठेत जीवघेणी स्पर्धा आहे. अशा स्पर्धात्मक बाजारपेठेत यशस्वी होणे नव्याने औद्योगिकीकरणाची कास धरू पाहणाऱ्या विकसनशील देशांसाठी एक मोठे आव्हान ठरते.

भारताने औद्योगीकरणावर भर द्यायचे ठरविले तरी, अशा वाटेवर चीन, व्हिएतनाम, बांगलादेश यांसारखे देश आधीच प्रस्थापित झाले आहेत, या वस्तुस्थितीकडे दुर्लक्ष करून चालणार नाही, तसेच भारतातील पायाभूत सुविधांची कमतरता लक्षात घेतली तर, मध्यम पल्ल्याच्या काळात ‘मेक इन इंडिया’ ही घोषणा प्रत्यक्षात उतरण्याची शक्‍यता धूसर आहे. त्यामुळे सरकारने कृषी विकासासाठी जोमाने प्रयत्न करण्याची गरज अधोरेखित होते. सरकारने अशा कामासाठी कंबर कसली तर कोट्यवधी ग्रामीण भारतीयांना उत्पादक रोजगाराच्या संधी उपलब्ध होतील. कृषी उत्पादनात वाढ झाली की महागाई नियंत्रणात राहील आणि गोरगरीब लोकांवर पोट आवळण्याची वेळ येणार नाही.

**४) “ग्रामीण भागातील अल्पभूधाक शेतकऱ्यांच्या समस्या** **आणि उपाय योजना”** **प्रा. एस. ई. कर्डक** **(सहाय्यक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, देवळाली कॅम्प महाविद्यालय, नाशिक.)**

ग्रामीण शेतकरी म्हणजे असे शेतकरी जे ग्रामीण भगत राहतात आणि त्यांच्या अस्तित्वासाठी कृषि आणि कृषिशी संबंधित कामांवर पूर्णपणे अवलंबून असतात. परंतु ग्रामीण भागातील शेतकऱ्यांची मुख्य अडचण ही आहे की, ग्रामीण अर्थव्यवस्थेचा विकास झालेला नाही जसे की, भारतातील जवळपास ८५ टक्के लोक ग्रामीण भगत राहतात. विकसनशील देशांच्या सरकारी खात्री आहे की, त्यांच्या विविध भगत पुरेसा ग्रामीण विकास झालेला नाही. प्रभावी आणि कार्यक्षम शेती पद्धतीची अंबलबाजवणी करण्याकडे आता लक्ष देणी जरुरीचे आहे. शाश्वत विकास दृष्टीने आता शेतीचा विकास होणे गरजेचे आहे. आशा रीतीने ग्रामीण भागातील शेतकऱ्यांना जास्तीत जास्त शेती उत्पन्न मिळवण्यासाठी मदत करणारे ज्ञान आणि माहितीचे देवाणघेवाण केली जावी की ज्यामुळे खेड्यांतून शहराकडे होणारे स्थलांतर कमी करता येईल.

आपला देशतील एक शेतकरी वर्ग एका वर्षामध्ये तीन पीक घेण्याची क्षमता बाळगतो, तरी शेतकरी आत्महत्यांचे अखंड प्रकरण ही एक लाजिरवाणी सत्य आहे. ही मृत्युची आकडेवारी खूपच जास्त आहे. शेकऱ्यांच्या आत्महत्यापेक्षा आपत्तीग्रस्त मृत्युवर जास्त सहानुभूति दाखवली जाते. भारतीय कृषि हे असंघटित क्षेत्रे आहे. भारतीय शेतीमध्ये कोणतीही पद्धतीशीर संस्थागत व संघनात्मक नियोजन शेती, सिंचन काढणी सामील नाही.

१ ते ५ एकर जमीन असलेले शेतकरी हे अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या अंतर्गत येतात. अल्पभूधारक शेतकरी श्रीमंती आणि मध्यम शेतकरी यांच्या मध्ये आहे. त्यांच्याकडे जमीन मर्यादित आहे आणि अपेक्षित कृषि उत्पादन कमी आहे. यामुळेच सामाजिक समस्या किंवा त्यांची स्थिती वाईट निर्माण होऊ शकते. कमी जमीन आणि जास्त खर्च यामुळेच अर्थव्यवस्था, नैराश्य आणि शारीरिक समस्या उद्भवतात. जस्टिकहहे उत्पन्न मिळवण्यासाठी मजूर म्हणून कुठेतरी काम करणे हे त्यांना अवघड आहे. आशा प्रकारे अल्पभूधारक शेतकरी अत्यंत कठीण परिस्थितीत आहेत.

लहान शेतकरी हा समाजाचा महत्वाचा घटक आहे. भारतीय अर्थव्यवस्था ही कृशही अर्थव्यवस्था मनाली जाते. या भररतीय कृषि अर्थव्यवस्थेत शेतकाऱ्यांना अनेक समस्या आहे. आता या सामाजिक व आर्थिक स्थितीवर लक्ष देण्याची वेळ आली आहे. शेतकरी या समस्येवर तोडगा (उपाय) काढण्याचा प्रयत्न कररतात. परंतु किफायतशीर ठरेल असे उपाय काढणे शेतकऱ्यांना शक्य नाही. कररण त्यांना अनंत अडचणी आहेत. वरील अभ्यासानुसार शेतकरी पेन्शन योजनेची मागणी करतात. ही वेळ केवळ विलासी (सुखी) जीवनासाठी नाहीतर अन्न सुरक्षतेसाठी मागणी करतात. त्याच बरोबर त्यांना दुष्काळवर बियाणे, खतांच्या पॅकेजवर अनुदान नको आहे. त्यांना शाश्वत शेती विकास हवा आहे. यासाठी शेतकरी पानी संकलन, सिंचन, नदीजोड प्रकल्प 0 टक्के लोन सुविधा, प्रक्रिया उद्योग इ. यासंदर्भात सरकारी संस्थांकडून शक्य प्रयत्नांची अपक्षा करते. यासाठी वरील उपाय योजनांचा योग्य विचार करून सरकारने शेतकऱ्यांच्या समस्या सोडविण्याचा प्रयत्न करावा.

**५) अनंत देशपांडे, “ शेतकरी आजही पारतंत्र्यातच” , दि. १८ जून २०२१, दैनिक अग्रोवन.**

१५ ऑगस्ट १९४७ ला आपल्याला स्वातंत्र्य मिळाले आणि २६ जानेवारी १९५० ला राज्यघटनेचा स्वीकार केला म्हणून हे दोन दिवस आपण मोठ्या उत्साहाने साजरे करत असतो. वास्तवात देशातील सत्तर टक्के शेतकरी देशातील इतर नागरिकांप्रमाणे स्वतंत्र झाला का, याचा विचार करायला हवा. १८ जून १९५१ या दिवशी शेतीचे आणि शेतकऱ्‍यांचे राज्यघटनेने बहाल केलेल्या मूलभूत अधिकाराच्या संरक्षणाचे कवच हिरावून घेणारा आणि त्यांना पारतंत्र्यात ढकलणारा काळा दिवस ठरला. त्या दिवशी लोकसभेत शेतकऱ्‍यांच्या गुलामीवर शिक्कामोर्तब करणारी घटनादुरुस्ती करण्यात आली. राज्यघटनेच्या अनुच्छेद ३१ (b) च्या अंतर्गत, आठ परिशिष्ट असलेल्या आपल्या राज्यघटनेला नववे परिशिष्ट जोडण्यात आले. या परिशिष्टामध्ये समावेश केल्या जाणाऱ्‍या कायद्यांना, देशातील कोणत्याही न्यायालयात न्याय मागता येणार नाही, अशी जगविपरीत तरतूद करण्यात आली. या परिशिष्ट-९ ने शेतकऱ्‍यांना गुलामासारखे पारतंत्र्यात टाकले.

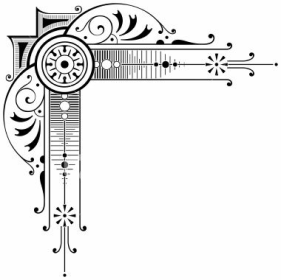
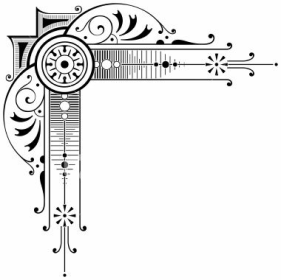
जमीनदारी संपुष्टात आणण्यासाठी फक्त १३ कायद्यांचा यात समावेश करण्यात येईल, असे वचन तत्कालीन पंतप्रधान पंडित जवाहरलाल नेहरू यांनी संसदेला दिले होते. आज मितीला या परिशिष्टात २८५ च्या वर कायदे अंतर्भूत करण्यात आले आहेत, त्यांपैकी २५४ पेक्षा अधिक कायदे शेतकऱ्‍यांना पारतंत्र्यात ढकलणारे आहेत. शेतकऱ्‍यांना न्यायबंदी घालणारी अशी घटनादुरुस्ती करणे म्हणजे राज्यघटनेतील घाणेरडी विसंगती आहे, असे राज्यघटनेचे शिल्पकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर म्हणाले होते.

स्वातंत्र्य मिळाले तेव्हा देशातील काही भागांत जमीनदारी व्यवस्था अस्तित्वात होती. शेतकऱ्‍यांकडून महसूल वसूल करायचा आणि तो इंग्रजांच्या तिजोरीत भरण्याचे अधिकार या जमीनदारांना होते. अर्थातच, जमिनीचे मालक शेतकरीच होते. पण महसूल भरण्यास अपात्र ठरलेल्या शेतकऱ्‍यांच्या जमिनी काढून दुसऱ्या शेतकऱ्‍यांना देण्याचे अधिकार जमीनदारांकडे होते. त्यासाठी त्यांना कमिशन मिळत असे. एकूण महसुलाचे अकरा भाग करण्यात येत, त्यांपैकी दहा हिस्से इंग्रज सरकारला भरले जायचे आणि एक हिस्सा जमीनदारांना मिळायचा. हे जमीनदार खुद्द जमीन कसत नसल्यामुळे ते शेतमालक नव्हते, केवळ दलाल होते. देश स्वतंत्र झाला आणि सरकारला जमिनीची पुनर्रचना करणे गरजेचे वाटू लागले. त्यासाठी जमीनदारांना बाजूला सारणे आवश्यक होते. सर्व जमिनी तर शेतकऱ्‍यांच्याच ताब्यात होत्या. राज्य सरकारांनी जमीनदारांना काही मोबदला देऊन त्यांचे कायदेशीर अधिकार संपुष्टात आणण्यासाठी कायदे केले. राज्याराज्यांतील मोबदल्याच्या रकमेत तफावत होती. मोबदल्याची रक्कम कमी आहे म्हणून बिहार, मध्य प्रदेश इत्यादी राज्यांतील काही जमीनदार सरकार विरोधात न्यायालयात गेले. बिहार कोर्टाने जमीनदाराच्या बाजूने निकाल दिला तो मोबदल्यासाठी. या निकालात कोर्टाने हवाला दिला की घटनेने बहाल केलेल्या मालमत्तेच्या मूलभूत अधिकारानुसार, सरकारला जमीनदाराच्या मूलभूत अधिकाराचा भंग करता येणार नाही. खरे तर हे भांडण जमीनदारांच्या मोबदल्याचे होते, जमिनीच्या मालकीचे नव्हते. पण या निकालानंतर तत्कालीन पंतप्रधान जवाहरलाल नेहरू अस्वस्थ झाले. त्याचे कारणही तसेच होते. त्यांच्या डोक्यात सोव्हिएत रशियाचे समाजवादी विकासाचे मॉडेल घर करून बसलेले होते. भारतातही त्यांना रशियासारखे मोठमोठे कारखाने उभे करायचे होते. त्यासाठी भविष्यात जमिनीची आवश्यकता भासणार होती. म्हणून जमिनी अधिग्रहीत करण्याचे अधिकार सरकारला हवे होते.

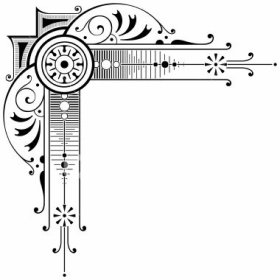
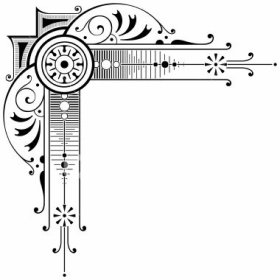
शिवाय गरिबांना जमिनी वाटण्याचे काँग्रेसने आपल्या जाहीरनाम्यात पूर्वीच वचन दिलेले होते, १९५२ मध्ये पहिल्या सार्वत्रिक निवडणुका येणार होत्या. गरिबांना वाटण्यासाठी भविष्यात शेतकऱ्‍यांच्या जमिनी संपादित कराव्या लागणार होत्या. प्रत्येक वेळी असे न्यायालये शेतकऱ्‍यांच्या मूलभूत अधिकारांच्या आड पडून सरकारच्या विरोधात निकाल द्यायला लागले तर सरकारला जमिनी संपादित करताच येणार नाहीत, हे नेहरूंनी ओळखले. म्हणूनच घटनादुरुस्ती करून शेतकऱ्‍यांना मूळ राज्यघटनेने बहाल केलेले मूलभूत अधिकार काढून घेण्याचे आणि त्यांना न्यायालयात जाताच येणार नाही, याची तरतूद करण्याचे षड्‌यंत्र १८ जूनच्या पहिल्या घटनादुरुस्तीद्वारे पार पाडण्यात आले. यथावकाश या परिशिष्ट - ९ मध्ये शेतकऱ्‍यांच्या व्यवसायाचा संकोच करणारे अनेक कायदे टाकण्यात आले आणि त्यांना न्यायबंदी घालण्यात आली. यात १) शेतजमीन धारणा कायदा, २) आवश्यक वस्तूंचा कायदा, ३) जमीन अधिग्रहण कायदा, इत्यादी महत्त्वाच्या कायद्यांचा समावेश आहे.  गेल्या सत्तर वर्षांपासून सरकारने या कायद्यांचा वापर करून शेतकऱ्‍यांच्या घरावरून नांगर फिरवला आहे. आवश्यक वस्तू कायद्याचा वापर करून शेतीमालाचे भाव सातत्याने खालच्या पातळीवर स्थिर राहतील, असे प्रयत्न केले आहेत. कधी तालुका बंदी, जिल्हाबंदी, राज्यबंदी, निर्यात बंदी घालण्यात आली आणि भाव पडले. तर कधी अनावश्यक आणि चढ्या भावाने शेतीमालाची आयात करून बाजारभाव पाडण्यात आले. कधी आयात शुल्क कमी करून आयात करण्याला प्रोत्साहन देऊन भाव पाडले. तर कधी निर्यात शुल्क वाढवून शेतीमालाच्या निर्यातीत खीळ घालून किमती कमी ठेवण्यात आल्या. आवश्यक वस्तू कायद्याच्या माध्यमातून हस्तक्षेप करून शेती सतत तोट्यात ठेवण्यात आली.

एका बाजूला शेती तोट्यात ठेवण्यात आली तर दुसऱ्‍या बाजूला, आधीच शेतजमीन धारणेच्या मर्यादेची बंधने असलेल्या शेतीचे भाऊवाटण्यामुळे आणखीन लहान तुकडे पडत गेले. आज देशातील शेतजमिनीचे सरासरी धारणा क्षेत्र अडीच एकरांवर येऊन बसले आहे. ही लहान लहान तुकड्यांची शेती कितीही पिकवली आणि त्याच्या शेतीमालाला काहीही भाव मिळाले तर परवडण्याच्या पलीकडे गेली आहे. त्यामुळेच आज दररोज चाळीस ते पन्नास शेतकरी वेगवेगळ्या मार्गाने आत्महत्या करत आहेत. आतापर्यंत चार लाखांवर शेतकऱ्‍यांनी आत्महत्या केलेल्या आहेत. या शेतकऱ्‍यांपैकी नव्वद टक्के शेतकरी अल्पभूधारक आहेत.

शेतकऱ्यांना या कोंडीतून बाहेर काढण्याचा आणि त्याला सन्मानाने जगण्याचा एकमेव मार्ग म्हणजे त्याच्यावरील घटनात्मक आणि कायदेशीर बंधंने काढून टाकणे. गेल्या सत्तर वर्षांपासून एका बाजूला शेतकऱ्याला बांधून टाकायचे आणि दुसऱ्या बाजूला त्याच्या पदरात योजनांच्या भिकेचे तुकडे फेकून आपापसांत मारामाऱ्‍या लावायच्या, असला दांभिकपणाचा खेळ आतातरी थांबवला पाहिजे. यात खरी मेख आहे ती आवश्यक वस्तू कायद्याची. या कायद्यातील अनिर्बंध हस्तक्षेपाच्या शक्यतेने राजकारण्यांना लायसेन्स, परमीट, कोटा राज तयार करता आले. या लायसेन्स राजमुळे सरकारी बाबूंच्या माध्यमातून हप्ते वसुलीच्या भ्रष्टाचाराचे कुरण तयार झाले आहे.



**प्रकरण ४ थे**

**तथ्य विश्लेषण व निर्वचन**

**प्रकरण 4 थे**

**तथ्य विश्लेषण व निर्वचन**

**सारणी 4.1**

**निवेदकांचे लिंग प्रकार दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | स्त्री | 16 | 32% |
| 2) | पुरुष | 34 | 68% |
| 3) | इतर | 00 | 00% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण:-**

वरील सरणी वरून असे निर्देशनात येते की, संशोधनासाठी निवडलेल्या 50 निवेदकांपैकी, स्त्री लिंग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 32% आहे. तर पुरुष लिंग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 34 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 68 % आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, पुरुष लिंग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 34 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 68% आहे.

**सारणी 4.2**

**निवेदकांचे वय वर्ष दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ.क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | 25 ते 35 वर्ष | 14 | 28% |
| 2) | 36 ते 45 वर्ष | 16 | 32% |
| 3) | 46 ते 55 वर्ष | 14 | 28% |
| 4) | 55 वर्षा पेक्षा जास्त | 06 | 12% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील साधने वरून असे निदर्शनास येते की, 25 ते 35 वर्ष वयोगट असलेल्या निवेदकांची संख्या 14 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 28% आहे, तर 36 ते 45 वर्ष वयोगट असलेल्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 32% आहे, तसेच 46 ते 55 वर्ष वयोगट असलेल्या निवेदकांची संख्या 14 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 28% आहे, आणि 55 वर्षापेक्षा जास्त वयोगट असलेल्या निवेदकांची संख्या 06 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 12%आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणानुसार असे निदर्शनास येते की, 36 ते 45 वर्ष वयोगट असणाऱ्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 32% आहे.

**सारणी 4.3**

**निवेदकांचे शिक्षणाची माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | प्राथमिक | 16 | 32% |
| 2) | माध्यमिक | 07 | 14% |
| 3) | उच्च माध्यमिक | 04 | 08% |
| 4) | पदवी/पदवित्तर | 03 | 06% |
| 5) | निरक्षर | 20 | 40% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, प्राथमिक शिक्षण घेणाऱ्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 32% आहे, तर माध्यमिक शिक्षण घेणाऱ्या निवेदकांची संख्या 07 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 14% आहे, तसेच उच्च माध्यमिक शिक्षण घेणाऱ्या निवेदकांची संख्या 04 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 08% आहे, त्याचप्रमाणे पदवी/पदवित्तर शिक्षण घेणाऱ्या निवेदकांची संख्या 03 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 06% आहे, आणि शिक्षण न घेणाऱ्या (निरक्षर) निवेदकांची संख्या 20 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 40% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, शिक्षण न घेणाऱ्या निरक्षर निवेदकांची संख्या 20 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 40% आहे.

**सारणी 4.4**

**निवेदकांचा जातीचा प्रवर्ग दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | अनुसूचित जाती | 07 | 14% |
| 2) | अनुसूचित जमाती | 09 | 18% |
| 3) | इतर मागासवर्गीय | 30 | 60% |
| 4) | भटक्या विमुक्त जमाती | 03 | 06% |
| 5) | खुला वर्ग | 01 | 02% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, अनुसूचित जाती प्रवर्ग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 07 असून त्यांची शेकडा प्रमाण 14% आहे, तर अनुसूचित जमाती प्रवर्ग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 09 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 18% आहे, तसेच इतर मागासवर्गीय जात प्रवर्ग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 30 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 60% आहे, त्याचप्रमाणे भटक्या विमुक्त जमाती प्रवर्ग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 03 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 06% आहे. आणि खुला प्रवर्ग दर्शवणारा निवेदकाची संख्या 01 असून त्याचे शेकडा प्रमाण 02% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, इतर मागासवर्गीय जात प्रवर्ग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 30 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 60% आहे.

**सारणी 4.5**

**निवेदकांची बोलीभाषा माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | मराठी | 17 | 34% |
| 2) | हिंदी | 00 | 00% |
| 3) | अहिराणी | 28 | 56% |
| 4) | इतर | 05 | 10% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी निर्देशनावरून असे निदर्शनास येते की, मराठी भाषा दर्शक निवेदकांची संख्या 17 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 34% आहे तर, हिंदी भाषा दर्शक निवेदकांची संख्या 0 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 0% आहे. अहिराणी भाषा दर्शक निवेदकांची संख्या 28 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 56% आहे तर, इतर भाषा दर्शक निवेदिकांची संख्या 05 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 10% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, अहिराणी भाषा दर्शक निवेदकांची संख्या 28 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 56% आहे.

**सारणी 4.6**

**निवेदकांचे वार्षिक उत्पन्न दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | 50 हजार च्या आत | 11 | 22% |
| 2) | 50 ते 75 हजार च्या आत | 27 | 54% |
| 3) | 75 ते 1 लाख च्या आत | 08 | 16% |
| 4) | 1 लाख च्या पुढे | 04 | 08% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

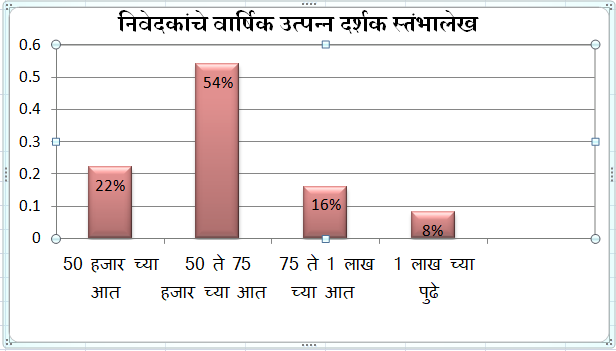
**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, 50 हजार च्या आत उत्पन्न असलेल्या निवेदकांची संख्या 11 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 22% आहे, तर 50 ते 75 हजार च्या आत उत्पन्न असलेल्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 54% आहे. 75 ते 1 लाख च्या आत उत्पन्न असलेल्या निवेदकांची संख्या 08 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 16% आहे, एक लाख व त्याच्यापुढे उत्पन्न असलेल्या निवेदकांची संख्या 04 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 8% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, 50 ते 75 हजार च्या आत उत्पन्न असलेल्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% आहे

आलेख क्र. १

****

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **टक्केवारी** |
| 1) | 50 हजार च्या आत | 22% |
| 2) | 50 ते 75 हजार च्या आत | 54% |
| 3) | 75 ते 1 लाख च्या आत | 16% |
| 4) | 1 लाख च्या पुढे | 08% |
|  | **एकूण** | 100% |

**सारणी 4.7**

**निवेदकांच्या कुटुंबातील, कुटुंब प्रमुख दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | स्वतः | 27 | 54% |
| 2) | आई | 05 | 10% |
| 3) | वडील | 08 | 16% |
| 4) | पती | 07 | 14% |
| 5) | लागू नाही | 03 | 06% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते कि, स्वतः कुटुंब प्रमुख असणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 54% आहे तर, आई कुटुंबप्रमुख असणाऱ्या निवेदकांची संख्या 05 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 10% आहे, तसेच वडील कुटुंबप्रमुख असणाऱ्या निवेदकांची संख्या 08 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 16% आहे, त्याचप्रमाण पती कुटुंबप्रमुख असणाऱ्या निवेदकांची संख्या 07 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 14% आहे, लागू नाही अशा निवेदकांची संख्या 3 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 06% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, स्वतः कुटुंबप्रमुख असणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% आहे.

**सारणी 4.8**

**निवेदकांचा कुटुंबाचा प्रकार दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | संयुक्त | 24 | 48% |
| 2) | विभक्त | 26 | 52% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, संयुक्त कुटुंब असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 24 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 48% आहे तर, विभक्त कुटुंब असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांचे संख्या संख्या 26 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 52% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, विभक्त कुटुंब असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 26 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 52% आहे.

**सारणी 4.9**

**निवेदकांच्या घरांचा प्रकार माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | पक्के सिमेंट | 20 | 40% |
| 2) | पत्राचे | 16 | 32% |
| 3) | मातीचे | 11 | 22% |
| 4) | कुडाचे | 03 | 06% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, पक्के सिमेंट घर असे मत व्यक्त करनाऱ्या निवेदकांची संख्या 20 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 40% आहे तर, पत्राचे घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 32% आहे तर मातीचे घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 11 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 22% आहे कुडाचे घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 03 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 06% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, पक्के घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 20 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 40% आहे

**सारणी 4.10**

**निवेदकांचे घर मालकिची माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 23 | 46% |
| 2) | नाही | 27 | 54% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 23 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 46% आहे तर, नाही मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 54% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27 असुन त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% आहे.

**सारणी 4.11**

**निवेदकांच्या घरांची व्यवस्था माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | भाड्याचे | 13 | 26% |
| 2) | तात्पुरते | 25 | 50% |
| 3) | नातेवाईक | 12 | 24% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, भाड्याचे घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 13 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 26% आहे तर तात्पुरते घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 25 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 50% आहे तर नातेवाईक असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 12 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 24% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, तात्पुरते घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 25 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 50% आहे.

**सारणी 4.12**

**निवेदकांना मिळणाऱ्या शिधापत्रिकांची माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 17 | 34% |
| 2) | नाही | 33 | 66% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 17 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 34% आहे तर, नाही मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 66% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 66% आहे.

**सारणी 4.13**

**निवेदकाच्या कुटुंबातील नोकरी धारक व्यक्ती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 17 | 34% |
| 2) | नाही | 33 | 66% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 17 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 34% आहे तर,नाही मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 66% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 66% आहे.

**सारणी 4.14**

**निवेदकाच्या कुटुंबातील रोजगार मिळवणाऱ्या व्यक्तींची माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | 1 ते 2 | 29 | 58% |
| 2) | 3 ते 4 | 15 | 30% |
| 3) | 5 ते 6 | 02 | 04% |
| 4) | सर्व जण | 04 | 08% |
|  | **एकुण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, 1 ते 2 असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 29 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 58% आहे, तर 3 ते 4 असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 15 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 30% आहे, 5 ते 6 असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 02 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 04% आहे, तर सर्वजण असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 04 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 08% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, 1 ते 2 असे मत व्यक्त करणाऱ्यांनी निवेदकांची संख्या 29 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 58% आहे.

**सारणी 4.15**

**निवेदकांच्या कुटुंबातील व्यसन दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ. क्र.** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 36 | 72% |
| 2) | नाही | 14 | 28% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 72% आहे तर, नाही मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 14 असून शेकडा प्रमाण 28% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 72% आहे.

**सारणी 4.16**

**निवेदकांच्या कुटुंबातील व्यसनाचे प्रकार दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | धूम्रपान | 14 | 28% |
| 2) | मद्यपान | 15 | 30% |
| 3) | तंबाखू | 16 | 32% |
| 4) | इतर | 05 | 10% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, धूम्रपान असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 14 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 28% आहेत तर मध्यपान असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 15 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 30% आहे तर तंबाखू असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 32% आहे इतर मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 05 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 10% आहे.

**निष्कर्ष:-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, तंबाखू असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 32% आहे.

**सारणी 4.17**

**निवेदकाकडे असलेले दळणवळणाचे साधने दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | सायकल | 17 | 34% |
| 2) | मोटार सायकल | 23 | 46% |
| 3) | चार चाकी | 04 | 08% |
| 4) | इतर | 06 | 12% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावर असे निदर्शनास येते की, सायकल असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 17 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 34% आहेत तर मोटरसायकल असे मत व्यक्त करणारा निवेदकांची संख्या 23 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 46% आहे तर चार चाकी असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 04 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 08% आहे इतर मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 06 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 12 %आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, मोटरसायकल असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 23 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 46% आहे

**सारणी 4.18**

**निवेदकाकडे असलेले पशुधनाची माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 14 | 28% |
| 2) | नाही | 36 | 72% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 14 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 28% आहे तर, नाही मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 72% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून त्यांचें सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 72% आहे.

**सारणी 4.19**

**निवेदकाकडे असलेली शेतीची माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | 1 एकर | 05 | 10% |
| 2) | 2 ते 3 एकर | 27 | 54% |
| 3) | 4 ते 5 एकर | 18 | 36% |
| 4) | 5 पेक्षा जास्त | 00 | 00% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की 1 एकर शेत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 05 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 10%आहे तर 2 ते 3 एकर शेत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 54% आहे तर 4 ते 5 एकर शेत दर्शवणारा निवेदकांची संख्या 18 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 36 %आहेत व 5 एकर पेक्षा जास्त शेत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 0 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 0% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, 2 ते 3 एकर शेत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% इतके आहे

**सारणी 4.20**

**निवेदकाला मिळणारी सामाजिक प्रतिष्ठा दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 33 | 66% |
| 2) | नाही | 17 | 34% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 66% आहे तर,नाही मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 17 असून त्यांचे शेकडा प्रमाण 34% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 66% आहे.

**सारणी 4.21**

**निवेदकाविषयी सामाजिक दृष्टिकोन दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | सकारात्मक | 18 | 36% |
| 2) | नकारात्मक | 9 | 18% |
| 3) | सांगता येत नाही | 23 | 46% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, सकारात्मक मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 18 असून शेकडा प्रमाण 36% आहे. तरj नकारात्मक मत दर्शवणाऱ्या निवेदिकाची संख्या 9 असून शेकडा प्रमाण 18% आहे. सांगता येत नाही असे मत दर्शवणाऱ्या निवेदिकांची संख्या 23 असून शेकडा प्रमाण 46% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, सांगता येत नाही असे मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 23 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 46% आहे.

**सारणी 4.22**

**सामाजिक कार्यक्रम निमंत्रण माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 35 | 70% |
| 2) | नाही | 15 | 30% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विशेषण आवरून असे निदर्शनास येते की, होय मग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 35 असून शेकडा प्रमाण 70% आहे तर नाही मतदार यांनी निवेदकांची संख्या 15 असून शेकडा प्रमाण 30% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की , होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 35 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 70% आहे.

**सारणी 4.23**

**सामाजिक कार्यक्रमात कौटुंबिक सहभाग माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 37 | 74% |
| 2) | नाही | 13 | 26% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्यां निवेदकांची संख्या 37 असून शेकडा प्रमाण 74% आहे तर नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदिकांची संख्या 13 असून शेकडा प्रमाण 26% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, होय मत दर्शवणाऱ्यां निवेदकांची संख्या 37 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74% आहे.

**सारणी 4.24**

**निवेदकाचे नातेसंबंधातील महत्त्व दर्शक माहिती सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 31 | 62% |
| 2) | नाही | 19 | 38% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्यां निवेदकांची संख्या 31 असून शेकडा प्रमाण 62% आहे तर नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदिकांची संख्या 19 असून शेकडा प्रमाण 38% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, होय मत दर्शवणाऱ्यां निवेदकांची संख्या 31 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 62% आहे.

**सारणी 4.25**

**निवेदकाच्या सामाजिक जीवनावर जाणवणारा परिणाम दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 49 | 98% |
| 2) | नाही | 1 | 2% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 49 असून शेकडा प्रमाण 98% आहे तर, नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 1 असून शेकडा प्रमाण 2% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारीणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 49 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 98% आहे.

**सारणी 4.26**

**आरोग्याच्या समस्यांबाबत नातेवाईकांकडून मिळणारी मदत दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 20 | 40% |
| 2) | नाही | 30 | 60% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणार आणि निवेदकांची संख्या 20 असून शेकडा प्रमाण 40% आहे तर नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 30 असून शेकडा प्रमाण 60% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील साधने विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदिकांची संख्या 30 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 60% आहे.

**सारणी 4.27**

**शेतीतून घेतले जाणारे पिकांची माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र** | **विवरण** | **वारंवारिता** | **टक्केवारी** |
| 1) | कापूस | 30 | 60% |
| 2) | मक्का | 7 | 14% |
| 3) | ज्वारी | 5 | 10% |
| 4) | बाजरी | 7 | 14% |
| 5) | इतर | 1 | 2% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, कापूस पीक दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 30 असून शेकडा प्रमाण 60% आहे, तर मका पिक दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 7 असून शेकडा प्रमाण 14% आहे, ज्वारी पिक दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 5 असून शेकडा प्रमाण 10% आहे, बाजरी पीक दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 7 असून शेकडा प्रमाण 14% आहे, इतर पिक दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 1 शेकडा प्रमाण 2% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, कापूस पिक दर्शविणाऱ्या निवेदिकांची संख्या 30 असून सर्वाधिक क्षेत्राप्रमाणे 60% आहे.

**सारणी 4.28**

**शेतातील उत्पन्नास मिळणारा योग्य भाव माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 3 | 6% |
| 2) | नाही | 47 | 94% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

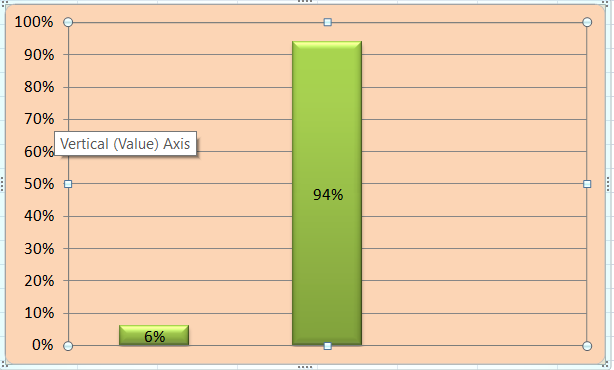
वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनात येते की, होय मत दर्शविणाऱ्या श निवेदकांची संख्या 3 असून शेकडा प्रमाण 6% आहे, तर नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 47 असून शेकडा प्रमाण 94% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरूनावरुन असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शवणाऱ्यांनी निवेदकांची संख्या 47 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 94% आहे.

आलेख क्र. २

**शेतातील उत्पन्नास मिळणारा योग्य भाव दर्शक स्तंभालेख**

****

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 6% |
| 2) | नाही | 94% |
|  | **एकूण** | 100% |

**सारणी 4.29**

**शेतीच्या उत्पन्नातून पूर्ण होणाऱ्या कौटुंबिक गरजा माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 13 | 26% |
| 2) | नाही | 37 | 74% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

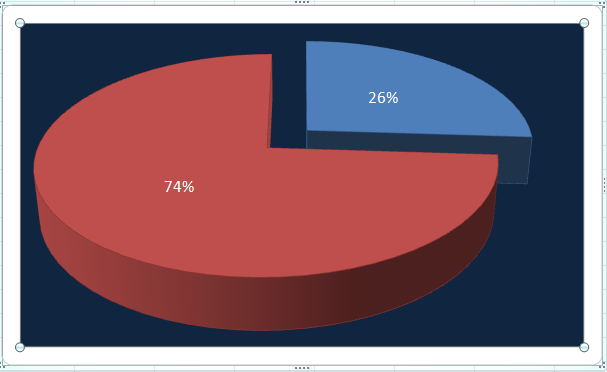
वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 13असून शेकडा प्रमाण 26% आहे तर नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 40 असून शेकडा प्रमाण 80% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74% आहे.

आलेख क्र. ३

**शेतीच्या उत्पन्नातून पूर्ण होणाऱ्या कौटुंबिक गरजा दर्शक वर्तुळालेख**.

****

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 26% |
| 2) | नाही | 74% |
|  | **एकूण** | 100% |

**सारणी 4.30**

**निवेदक करत असलेल्या शेती प्रकार दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | बागायत | 10 | 20% |
| 2) | जिरायत | 40 | 80% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, बागायत शेती करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 10 असून शेकडा प्रमाण 20% आहे तर जिरायत शेती करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 40 असून शेकडा प्रमाण 80% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, जिरायत शेती करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 40 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 80% आहे

**सारणी 4.31**

**शेतीतील घेतली जाणारी पीक पद्धत दर्शक सरणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | एकेरी पीक पद्धत | 41 | 82% |
| 2) | दुहेरी पीक पद्धत | 9 | 18% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की एकेरी पीक पद्धत दर्शक निवेदकांची संख्या 41 असून शेकडा प्रमाण 82% आहे, तर दुहेरी पीक पद्धत दर्शक निवेदकांची संख्या 9 असून शेकडा प्रमाण 18% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, एकेरी पीक पद्धत दर्शक निवेदिकांची संख्या 41 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 82% आहे

**सारणी 4.32**

**शेतीसाठी मिळणाऱ्या शासकीय योजनांविषयी लाभ माहिती दर्शक सरणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 14 | 28% |
| 2) | नाही | 36 | 72% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 14 असून शेकडा प्रमाण 28% आहे तर नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून शेकडा प्रमाण 72% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 72% आहे.

**सारणी 4.33**

**निवेदकास बँकेद्वारे कर्ज उपलब्ध माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 38 | 76% |
| 2) | नाही | 12 | 24% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 38 असून शेकडा प्रमाण 76% आहे तर नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 12 असून शेकडा प्रमाण 24% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, होय मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 38 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 76% आहे.

**सारणी 4.34**

**निवेदकावर कर्ज असल्याचे माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 40 | 80% |
| 2) | नाही | 10 | 20% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

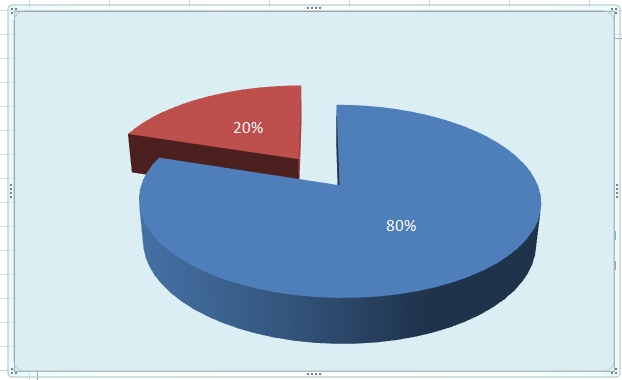
वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 40 असून शेकडा प्रमाण 80% आहे, तर नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 10 असून शेकडा प्रमाण 20% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, होय मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 40 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 80% आहे.

आलेख क्र. ४

**निवेदकावर कर्ज असल्याचे माहिती दर्शक वर्तुळालेख.**

****

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 80% |
| 2) | नाही | 20% |
|  | **एकूण** | 100% |

**सारणी 4.35**

**निवेदकावर असलेल्या कर्जाचा प्रकार दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | सावकारी कर्ज | 28 | 56% |
| 2) | बँक कर्ज | 22 | 44% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनात येते की सावकारी कर्ज मत दर्शक निवेदकांची संख्या 28 असून शेकडा प्रमाण 56% आहे तर बँक कर्ज मत दर्शक निवेदकांची संख्या 22 सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 44%आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, सावकारी कर्ज मत दर्शक निवेदकांची संख्या 28 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 56% आहे

**सारणी 4.36**

**निवेदकाच्या शेती उत्पन्नातून मुलांच्या शैक्षणिक पूर्ण होणाऱ्या गरजांविषयी माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 3 | 6% |
| 2) | नाही | 47 | 94% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 3 असून शेकडा प्रमाण 6% आहे तर नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 47 असून शेकडा प्रमाण 94% आहे

**निष्कर्ष** :-

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 47 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 94% आहे.

**सारणी 4.37**

**निवेदकाचा शेती सोबत इतर जोडधंदा दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | कुक्कुटपालन | 14 | 28% |
| 2) | शेळीपालन | 10 | 20% |
| 3) | दुकान | 4 | 8% |
| 4) | काहीच नाही | 22 | 44% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की,कुक्कुटपालन करणाऱ्यां निवेदकांची संख्या 14 असून शेकडा प्रमाण 28% आहे, तर शेळीपालन करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 10 शेकडा प्रमाण 20% आहे, तर दुकान असलेल्या निवेदकांची संख्या 4 असून शेकडा प्रमाण 8% आहे, काहीच नाही असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 22 असून शेकडा प्रमाण 44% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, काहीच नाही असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 22 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 44% आहे

**सारणी 4.38**

**निवेदक करत असलेल्या शेतीचा प्रकार दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | आधुनिक | 13 | 26% |
| 2) | पारंपारिक | 37 | 74% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, आधुनिक शेती प्रकार दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 13 असून शेकडा प्रमाण 26% आहे तर पारंपारिक शेती प्रकार दर्शवणाऱ्या आणि निवेदकांची संख्या 37 असून शेकडा प्रमाण 74% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, पारंपारिक शेती प्रकार दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 पासून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74%आहे

**सारणी 4.39**

**निवेदक शेतीमध्ये वापरणाऱ्या खतांविषयी माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | रासायनिक | 26 | 52% |
| 2) | सेंद्रिय खते | 24 | 48% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, रासायनिक खते वापर करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 26 शेकडा प्रमाण 52% आहे तर, सेंद्रिय खते वापर करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 24 असून शेकडा प्रमाण 48% आहे.

**निष्कर्ष :-**

वरील सरणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, रासायनिक खते वापर करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 26 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 52% आहे.

**सारणी 4.40**

**निवेदकाने घेतलेल्या शेतीविषयक प्रशिक्षण माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 2 | 4% |
| 2) | नाही | 48 | 96% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 2 असून शेकडा प्रमाण 4% आहे तर, नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 48 असून शेकडा प्रमाण 96% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 48 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 96% आहे.

**सारणी 4.41**

**निवेदकाला बी-बियाणे व कीटकनाशके यांच्या किमती परवडणाऱ्या माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 1 | 2% |
| 2) | नाही | 49 | 98% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 1असून शेकडा प्रमाण 2% आहे तर, नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 49 असून शेकडा प्रमाण 98% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 49 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 98% आहे.

**सारणी 4.42**

**निवेदकाला शेतीचे उत्पन्न पुरेसे असल्याविषयी माहिती दर्शक सारणी**

|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 8 | 16% |
| 2) | नाही | 42 | 84% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 8 असून शेकडा प्रमाण 16% आहे तर नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 42 असून शेकडा प्रमाण 84% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 42 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 84% आहे.

**सारणी 4.43**

**निवेदकाच्या शेती उत्पन्नातून कौटुंबिक विकास दर्शक सारणी**

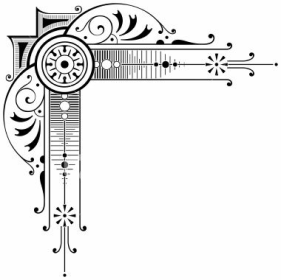
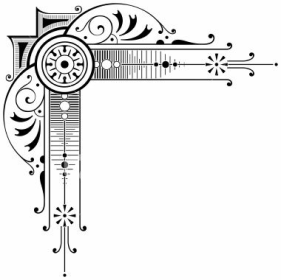
|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| **अ क्र.** | **विवरण** | **वारंवारता** | **टक्केवारी** |
| 1) | होय | 13 | 26% |
| 2) | नाही | 37 | 74% |
|  | **एकूण** | 50 | 100% |

**विश्लेषण :-**

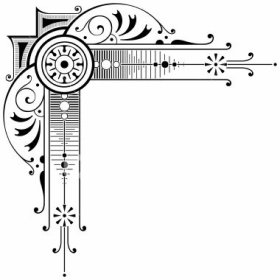
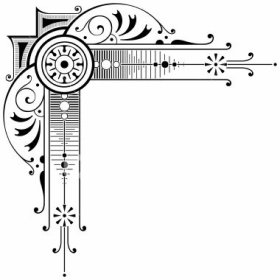
वरील सारणी विश्लेषणावरून असे निदर्शनास येते की, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 13 असून शेकडा प्रमाण 26% आहे तर नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 असून शेकडा प्रमाण 74% आहे

**निष्कर्ष :-**

वरील सारणी विश्लेषणावरून असा निष्कर्ष निघतो की, नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74 % आहे.



**प्रकरण ५ वे**

**निष्कर्ष, गृहीत कृत्यांची पडताळणी व सूचना**

**प्रकरण 5 वे**

**निष्कर्ष, गृहीत कृत्यांची पडताळणी व सूचना**

**अ) निष्कर्ष**

1. पुरुष लिंग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 34 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 68% आहे.
2. 36 ते 45 वर्ष वयोगट असणाऱ्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 32% आहे.
3. शिक्षण न घेणाऱ्या निरक्षर निवेदकांची संख्या 20 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 40% आहे.
4. इतर मागासवर्गीय जात प्रवर्ग दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 30 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 60% आहे.
5. अहिराणी भाषा दर्शक निवेदकांची संख्या 28 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 56% आहे.
6. 50 ते 75 हजार च्या आत उत्पन्न असलेल्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% आहे.
7. स्वतः कुटुंबप्रमुख असणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% आहे.
8. विभक्त कुटुंब असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 26 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 52% आहे.
9. पक्के घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 20 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 40% आहे
10. घर मालिकेचे नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27 असुन त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% आहे.
11. तात्पुरते घर असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 25 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 50% आहे.
12. शिधापत्रिका नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 66% आहे.
13. कुटुंबात नोकरीधारक नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 41असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 82% आहे.
14. रोजगार मिळवणारे व्यक्ती 1 ते 2 असे मत व्यक्त करणाऱ्यांनी निवेदकांची संख्या 29 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 58% आहे.
15. कुटुंबात व्यसन होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 72% आहे.
16. तंबाखू व्यसन असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 16 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 32% आहे.
17. दळणवळणासाठी मोटरसायकल असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 23 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 46% आहे
18. पशुधन नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून त्यांचें सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 72% आहे.
19. 2 ते 3 एकर शेत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% इतके आहे
20. सामाजिक प्रतिष्ठा मिळते होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 66% आहे.
21. सामाजिक दृष्टिकोन सांगता येत नाही असे मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 23 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 46% आहे.
22. सामाजिक कार्यक्रमात निमंत्रण मिळते होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 35 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 70% आहे.
23. सामाजिक कार्यक्रमात कौटुंबिक सहभाग होय मत दर्शवणाऱ्यां निवेदकांची संख्या 37 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74% आहे.
24. नातेसंबंधात महत्त्व होय मत दर्शवणाऱ्यां निवेदकांची संख्या 31 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 62% आहे.
25. सामाजिक जीवनात परिणाम होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 49 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 98% आहे.
26. नातेवाईकांकडून मदत नाही मत दर्शवणाऱ्या निवेदिकांची संख्या 30 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 60% आहे.
27. शेतात कापूस पिक दर्शविणाऱ्या निवेदिकांची संख्या 30 असून सर्वाधिक क्षेत्राप्रमाणे 60% आहे.
28. उत्पन्नास योग्य भाव नाही मत दर्शवणाऱ्यांनी निवेदकांची संख्या 47 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 94% आहे.
29. गरजा पूर्ण होत नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74%
30. जिरायत शेती करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 40 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 80% आहे
31. एकेरी पीक पद्धत दर्शक निवेदिकांची संख्या 41 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 82% आहे
32. शासकीय योजनांचा लाभ नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 72% आहे.
33. कर्ज उपलब्ध होते होय मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 38 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 76% आहे.
34. निवेदकावर कर्ज होय मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 40 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 80% आहे.
35. सावकारी कर्ज मत दर्शक निवेदकांची संख्या 28 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 56% आहे
36. मुलांच्या शैक्षणिक गरजा पूर्ण नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 47 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 94% आहे.
37. इतर जोडधंदा काहीच नाही असे मत व्यक्त करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 22 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 44% आहे
38. पारंपारिक शेती प्रकार दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 पासून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74%आहे
39. रासायनिक खते वापर करणाऱ्या निवेदकांची संख्या 26 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 52% आहे.
40. शेतीविषयक प्रशिक्षण नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 48 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 96% आहे.
41. किमती परवडणाऱ्या नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 49 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 98% आहे.
42. शेतीचे उत्पन्न पुरेसे नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 42 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 84% आहे.
43. शेती उत्पन्नातून कौटुंबिक विकास नाही मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74% आहे.

**ब) गृहीत कृत्यांची पडताळणी**.

1. **अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या आर्थिक स्थिती निम्न स्वरूपाची आहे.**

**प्रस्तुत गृहीतकृत्य हे सिद्ध होत असल्याचे दिसून येते.**

कारण **सारणी क्र.4.29** नुसार शेतीच्या उत्पन्नातून पूर्ण होणाऱ्या कौटुंबिक गरजा पूर्ण होत नाही, असे मत

दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74% आहे. **सारणी क्र. 4.28** नुसार उत्पन्नास योग्य भाव मिळत नाही, असे मत दर्शवणाऱ्यां निवेदकांची संख्या 47 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 94% आहे. **सारणी क्र. 4.35** नुसार सावकारी कर्ज आहे, असे मत दर्शक निवेदकांची संख्या 28 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 56% आहे. **सारणी क्र. 4.41** नुसार बी-बियाणे व कीटकनाशके यांच्या किमती परवडणाऱ्या नाही, मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 49 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 98% आहे. **सारणी क्र. 4.06** नुसार निवेदकाचे वार्षिक उत्पन्न 50 ते 75 हजार च्या आत असलेल्या निवेदकांची संख्या 27 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 54% आहे.

1. **अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या सामाजिक जीवनाचा स्तर निम्न आहे.**

**प्रस्तुत गृहीतकृत्य हे सिद्ध होत नसल्याचे दिसून येते.**

कारण **सारणी क्र.4.20** नुसार निवेदकाला समाजात योग्य प्रतिष्ठा मिळते असे, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 66% आहे. तसेच **सारणी क्र.4.22 नुसार** निवेदकाला सामाजिक कार्यक्रमात निमंत्रण मिळते असे, होय मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 35 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 70% आहे.

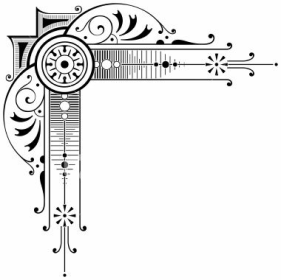
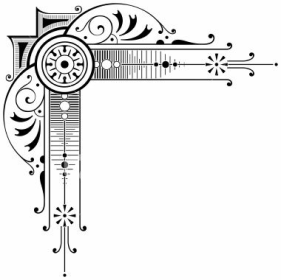
1. **अल्पभूधारक शेतकऱ्यांची कौटुंबिक स्थितीत सुधारणा सौम्य स्वरूपाची आहे.**

**प्रस्तुत गृहीतकृत्य हे सिद्ध होत असल्याचे दिसून येते.**

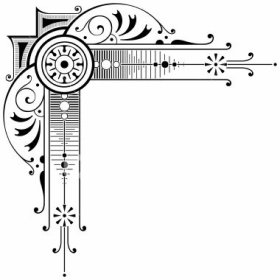
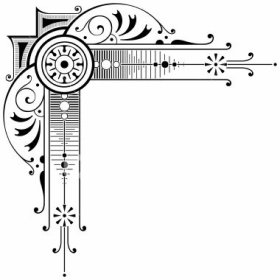
कारण **सारणी क्र. 4.13** नुसारनिवेदकाच्या कुटुंबातील नोकरी धारक व्यक्ती नाही, असे मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 33 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 66% आहे. तसेच **सारणी क्र. 4.18** नुसार निवेदकाकडे पशुधन नाही, असे मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 36 असून त्यांचें सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 72% आहे. तर **सारणी क्र. 4.29** नुसार शेती उत्पन्नातून कौटुंबिक गरजा पूर्ण होत नाही, असे मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74% आहे. **सारणी क्र. 4.36** नुसार शेती उत्पन्नातून मुलांच्या शैक्षणिक गरजा पूर्ण होत नाही, असे मत दर्शविणाऱ्या निवेदकांची संख्या 47 असून सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 94% आहे. आणि **सारणी क्र. 4.43** नुसार शेती उत्पन्नातून कौटुंबिक विकास होत नाही, असे मत दर्शवणाऱ्या निवेदकांची संख्या 37 असून त्यांचे सर्वाधिक शेकडा प्रमाण 74 % आहे.

**क) सूचना / उपाययोजना**

1. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या मुलांनी उच्च शिक्षण घेतले पाहिजे.
2. अल्पभूधारक शेतकरी कुटुंबातील पुरुष व्यक्तींनी व्यसनापासून दूर राहिले पाहिजे.
3. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांनी आर्थिक स्थिती सुधारण्यासाठी प्रयत्न केले पाहिजे.
4. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांनी शेतीविषयक प्रशिक्षण घेतले पाहिजे.
5. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांनी आधुनिक शेती पद्धतीचा वापर केला पाहिजे.
6. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांनी शेतीत सेंद्रिय खतांचा वापर केला पाहिजे.
7. शेतकऱ्यांनी शेतीविषयक शासकीय योजनांचा लाभ घेतला पाहिजे.
8. शेतकऱ्यांनी शेतीपूरक इतर जोडधंदा केला पाहिजे.
9. शेतीत दुहेरी किंवा मिश्र पीक पद्धतीचा वापर केला पाहिजे.
10. अल्पभूधारक शेतकऱ्यांच्या मुलांनी कौशल्य प्रशिक्षण व व्यवसायिक प्रशिक्षण घेतले पाहिजे.
11. शासनाने विविध शिबिरांच्या माध्यमातून त्यांना आर्थिक स्वावलंबी करण्यासाठी प्रोत्साहित केले पाहिजे.
12. शासनाने फक्त प्रशिक्षण न देता त्यांना रोजगार देखील उपलब्ध करून दिला पाहिजे.



**परिशिष्ट**

1. **मुलाखत** **अनुसूची**
2. **संदर्भ ग्रंथसूची**

**परिशिष्ट**

**मुलाखत** **अनुसूची**

**कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगाव.**

**समाजकार्य** **विभाग**

**लघुशोध प्रबंध – २०२२-२३**

**-: संशोधन** **विषय :-**

**“अल्पभूधारक** **शेतकरी** **कुटुंब** **यांच्या** **सामाजिक** **व** **आर्थिक** **स्थितीचा** **अभ्यास”**

**(विशेष** **संदर्भ : तळोंदे (दिगर) ता. चाळीसगाव, जि. जळगांव.)**

संशोधक मार्गदर्शक

**विकास** **सुभाष** **पाटील**   **वर्षा** **एस** **पालखे**

एम.एस.डब्ल्यू. द्वितीय वर्ष सहा. प्राध्यापक. समाजकार्य विभाग,

क.ब.चौ.उ.म.वि.**,** जळगाव.

टीप :- १) या अनुसूचीतील माहिती गुप्त ठेवली जाईल.

२) या अनुसूचीतील माहिती फक्त संशोधन कार्यासाठीच वापरली जाईल.

**अ) वैयक्तिक** **माहिती**

1. निवेदकाचे नाव:-\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_
2. निवेदकाचे लिंग अ) स्त्री ब) पुरुष क) तृतीयपंथी
3. निवेदकाचे वय अ) २५ ते ३५ ब) ३६ ते ४५

क) ४६ ते ५५ ड) ५६ च्या वरती

1. शिक्षण अ) प्राथमिक ब) माध्यमिक क) उच्च माध्यमिक

ड) पदवीधर / पदव्युत्तर पदवी इ) निरक्षर

1. जातीचा प्रवर्ग अ) एसटी ब) एससी क) एनटी ड) ओबीसी इ) जनरल
2. निवेदकाची बोली भाषा अ) मराठी ब) हिंदी क) अहिराणी ड) इतर
3. निवेदकाचे वार्षिक उत्पन्न अ) ५० हजार च्या आत ब) ५० ते ७५ हजार

क) ७५ हजार ते १ लाख ड)१ लाखाच्या पुढे

**ब) कौटुंबिक** **माहिती**

1. **कुटुंब सदस्यांची माहिती :-**

| अ. नं. | कुटुंब सदस्यांची नाव | वय | लिंग | शिक्षण | व्यवसाय |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| 1. |  |  |  |  |  |
| 2. |  |  |  |  |  |
| 3. |  |  |  |  |  |
| 4. |  |  |  |  |  |
| 5. |  |  |  |  |  |

1. निवेदकाच्या कुटुंबातील प्रमुख कोण ?

अ) स्वतः ब) आई क) वडील ड) लागू नाही

1. निवेदकाच्या कुटुंबाचा प्रकार ? :-

अ) संयुक्त कुटुंब ब) विभक्त कुटुंब

1. निवेदकाचे घराचा प्रकार कोणता ?

अ) पक्के सिमेंट ब) पत्र्याचे क) मातीचे ड) कुडाचे

1. घर स्वतःचे आहे का ?

अ) होय ब) नाही

1. नसल्यास, घराची व्यवस्था काय आहे ?

अ) भाड्याचे ब) नातेवाईकाचे क) तात्पुरते ड) लागू नाही

1. घरातील करमणुकीचे साधन कोणती

अ) टी. व्ही. ब) मोबाइल क) रेडियो ड) इतर

1. निवेदकास मिळणाऱ्या पायाभूत सुविधा

अ) वीज ब) पानी क) स्वस्त धान्य ड) वरील सर्व

1. निवेदक शिधा पत्रिका धारक आहे का ?

अ) होय ब) नाही

1. असल्यास कोणत्या प्रकारचे आहे ?

अ) पिवळे ब) केशरी क) पांढरे ड) लागू नाही

1. कुटुंबातील व्यक्ति कोणी नोकरीस आहे का ?

अ) होय ब) नाही

1. असल्यास, नोकरीचा प्रकार कोणता ?

अ) शासकीय ब) खाजगी क) कंत्राटी ड) लागू नाही

1. कुटुंबात रोजगार मिळवणाऱ्या व्यक्तींची संख्या ?

अ) १-२ ब) ३-४ क) ५-६ ड) सर्व जण

1. घरातील कोणाला व्यसन आहे का ? (निरीक्षणात्मक)

अ) होय ब) नाही

1. असल्यास, कोणत्या प्रकारचे आहे ?

अ) धुम्रपान ब) मद्यपान क) तंबाकू ड) गुटखा

1. निवेदकाकडे दळणवळण साधन कोणती ?

अ) सायकल ब) मोटरसायकल क) चारचाकी ड) इतर

1. निवेदकाकडे पशुधन आहे का ?

अ) होय ब) नाही

1. असल्यास, कोणते पशुधन आहे ?

अ) गाय ब) म्हैस क) बैल ड) इतर

**क) सामाजिक** **प्रश्न**

1. निवेदकाकडे किती शेती क्षेत्र आहे ?

अ) १ एकर ब) २ ते ३ एकर क) ४ ते ५ एकर ड) ५ एकर पेक्षा जास्त

1. समाजात वावरतांना योग्य प्रतिष्ठा मिळते का ?

अ) होय ब) नाही

1. अल्पभूधारक शेतकरी म्हणून समाजाचा पाहण्याचा दृष्टिकोन कसा आहे ?

अ) सकारात्मक ब) नकारात्मक

1. सामाजिक कार्यक्रमात निमंत्रण दिले जाते का ?

अ) होय ब) नाही

1. सामाजिक विविध कार्यामध्ये आपल्या कुटुंबाचा सक्रिय सहभाग असतो का?

अ) होय ब) नाही

1. नाते संबंध जोडतांना तुमच्या कुटुंबाचा विचार केला जातो का ?

अ) होय ब) नाही

1. अल्पभूधारक शेतकरी म्हणून सामाजिक जीवनावर परिणाम जाणवतात का?

अ) होय ब) नाही

1. कौटुंबिक आरोग्याच्या समस्येचे निराकरण म्हणून नातेवाईक मदत करतात का ?

अ) होय ब) नाही

**ड) आर्थिक प्रश्न**

1. आपण शेतात प्रामुख्याने कोणते पीक घेतात ?

अ) कापूस ब) मका क) ज्वारी ड) बाजरी क) इतर

1. शेतीत पिकावलेल्या उत्पन्नाला योग्य भाव मिळतो का ?

अ) होय ब) नाही

1. शेतीतून मिळणारे उत्पन्नातून आपल्या मूलभूत गरजा पूर्ण होतात का ?

अ) होय ब) नाही

1. तुम्ही कोणत्या प्रकारची शेती करतात ?

अ) बागायती ब) जिरायत

1. शेतीची पीक पद्धत कोणती ?

अ) एकेरी पीक पद्धत ब) बहू/मिश्र पीक पद्धत

1. शेतीविषयक शासकीय योजनांचा लाभ मिळतो का ?

अ) होय ब) नाही

1. शेतीसाठी बँक कर्ज उपलब्ध करून देते का ?

अ) होय ब) नाही

1. निवेदकावर कर्ज आहे का ?

अ) होय ब) नाही

1. असल्यास, कोणत्या प्रकारचे ?

अ) सावकारी कर्ज ब) बँक कर्ज

1. शेतातून मिळणाऱ्या उत्पन्नातून मुलांच्या शैक्षणिक गरजा पूर्ण होतात का?

अ) होय ब) नाही

1. शेतीसोबत इतर जोडधंदा करता का ?

अ) होय ब) नाही

1. असल्यास, कोणता प्रकारचा जोडधंदा करता ?

अ) कुक्कुटपालन ब) शेळीपालन क) दुकान ड) यापैकी नाही

1. निवेदक कोणत्या प्रकाराची शेती करतात ?

अ) आधुनिक शेती ब) पारंपरिक शेती

1. शेतीमध्ये कोणत्या प्रकारची खते वापरतात ?

अ) रासायनिक खते ब) सेंद्रिय खते

1. निवेदकाने शेतीविषयक प्रशिक्षण घेतले आहे का ?

अ) होय ब) नाही

1. शेतीत लागणारे बी-बियाणे, खते व कीटकनाशके यांच्या किमती परवडणारे आहेत का ?

अ) होय ब) नाही

1. शतीचे उत्पन्न हे पुरेसे असते का ?

अ) होय ब) नाही

1. शेतीच्या उत्पन्नातून कौटुंबिक विकास होतो का ?

अ) होय ब) नाही

**दिनांक :**

**ठिकाण :**

**संशोधकाची सही निवेदकाची सही**

**संदर्भ ग्रंथसूची**

1. प्राचार्य डॉ. सुधीर बोधनकर, "सामाजिक संशोधन पद्धती", श्री साईनाथ प्रकाशन, नागपुर, चतुर्थ आवृत्ती, जानेवारी २००७.
2. डॉ. मारूती कुसमुडे, "धरलं तर चावतंय आणि सोडलं तर पळतय", दैनिक देशदूत, दि.२८ जुलै २०२०.
3. अश्विनी कुलकर्णी, “छोटय़ा शेतकऱ्यांना ‘हमी’ हवी..” लोकसत्ता वृत्तपत्र, दि. ०१ जुलै २०१५.
4. रमेश पाध्ये, "बहरू शकतो रोजगाराचा ‘मळा", दैनिक सकाळ,

दि. १६ जानेवारी २०१७.

1. प्रा. एस. ई. कर्डक, "ग्रामीण भागातील अल्पभूधाक शेतकऱ्यांच्या समस्या आणि उपाय योजना" (सहाय्यक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, देवळाली कॅम्प महाविद्यालय, नाशिक)
2. अनंत देशपांडे, “ शेतकरी आजही पारतंत्र्यातच” , दैनिक अग्रोवन, दि. १८ जून २०२१.
3. डॉ. सौ. निर्मल भालेराव, "भारतीय कृषी अर्थव्यवस्था", निराली प्रकाशन, पुणे.
4. डॉ. नीता वानी, "कृषी अर्थशास्त्र", प्रशांत पब्लिकेशन, जळगाव.
5. [www.google.com](http://www.google.com) / [www.wikipedia.com](http://www.wikipedia.com) / [www.vikaspedia.com](http://www.vikaspedia.com)
6. दैनिक लोकसत्ता, सकाळ, महाराष्ट्र टाईम.